जीवनी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जीवनी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद

रज़ी अल्लाह अन्हो ख़लीफ़ तुलमसीह सानी (द्वित्तीय)

अनुवादक

बुश्रा तय्यबा ग़ौरी

सदर लजना इमाउल्ला भारत

प्रकाशक :

नज़ारत नशरो इशाअत

सदर अन्जुमन अहमदिया

क़ादियान - 143516

ज़िला - गुरदासपुर (पंजाब)

अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम तथा आप की पारिवारिक दशा

अहमद जो अहमदिय्या जमाअत के संस्थापक थे आप का पूरा नाम ग़ुलाम अमहद था तथा आप क़ादियान के निवासी थे जो बटाला रेलवे स्टेशन से ग्यारह मील अमृत्सर से चौबीस मील तथा लाहौर से लगभग सत्तर मील पूर्व में एंक कसबा है आप लगभग 1836 ई. या 1837 में इसी गांव में मिर्ज़ा ग़ुलाम मुरतज़ा साहिब के घर शुक्रवार के दिन पैदा हुए। आप का जन्म जुड़वाँ था अर्थात आप के साथ एक लड़की का भी जन्म हअुा था जिस का थोड़े ही समय पश्चात् देहांत हो गया था।

इस से पूर्व कि में आप की जीवनी का वर्णन करूं आवश्यक है कि संक्षिप्त रूप में आप के परिवार के भी कुछ हालात का वर्णन कर दिया जाए आप का परीवार अपने क्षेत्र का एक सम्मानित परिवार था तथा इस का पारीवारिक इतिहास बरलांस से जो अमीर तैमूर का चाचा था मिलता है तथा जब अमीर तैमूर ने कुश के क्षेत्र पर भी जिस पर इस का चाचा अधिकारी था अधिकार कर लिया तो बरलांस परिवार ख़ुरासान में चला आया तथा लम्बे समय तक यहीं रहा परन्तु दसवीं शताब्दी हिजरी या सौलहवीं शताब्दी मसीही के अन्त में इस परिवार का एक सदस्य मिरज़ा हादी बैग़ कुछ ग़ैर मालूम समस्याओं के कारण इस देश को छोड़ कर लगभग दो सौ आदमियों के साथ हिन्दुस्तान आ गया तथा दरिया ब्यास के समीप के क्षेत्र में उस ने अपना डेरा लगाया तथा ब्यास से 9 मील की दूरी पर उस ने एक गांव बसाया तथा उस का नाम इस्लामपुर रखा (अर्थात इस्लाम का शहर) क्योंकि आप बहुत अधिक योग्य पुरूष थे इसलिए दिल्ली की सरकार की ओर से इस क्षेत्र के काज़ी नियुक्त किए गए तथा इस पद के कारण ही इस गांव का नाम इस्लामपुर के बजाए इस्लामपुर काज़ी हो गया। इस्लामपुर जो काज़ी का स्थान है तथा बिगड़ते बिगड़ते इस्लामपुर का नाम तो पूर्ण रूप से मिट गया तथा केवल काज़ी रह गया जो पंजाबी लहजे में कादी बन गया

....

तथा अन्त में इस से बिगड़ कर इस का नाम क़ादियान हो गया अतः मिर्ज़ा हादी बेग साहब ने ख़ुरासान से आ कर ब्यास के निकट एक गांव बसाया तथा उस में रहना आरम्भ कर दिया तथा इसी स्थान पर उन का परीवार हमेशा रहा तथा बावजूद दिल्ली की सरकार से दूर रहने के इस परीवार के सदस्य मुग़लीया सरकार के अधीन सम्मानित पदों पर कार्य करते रहे तथा जब मुग़लीया परिवार को दुर्बलता पहुंची तथा पंजाब में ख़ाना जंगी फ़ैल गई तो यह परिवार एक स्वतंत्र शासन के रूप में क़ादियान के इर्द-गिर्द के क्षेत्रे पर जो लगभग साठ मील का क्षेत्र था राज्य करता रहा परन्तु सिक्खों के ज़ोर के समय राम गड़ीया सिख्खों ने कुछ और परिवारों के साथ मिल कर इस परिवार के विरूद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया उन के परदादा ने तो अपने समय में एक सीमा तक शत्रुओं के आक्रमणों को रोका परन्तु धीरे-धीरे हज़रत मिर्ज़ा साहब के दादा के समय इस रियासत की दशा ऐसी कमज़ोर हो गई कि केवल क़ादियान जो इस समय एक किले के रूप में था इस के चारों ओर प्रचीर (दीवार) थी इस के अधिकार में रह गया तथा शेष सारा क्षेत्र उन के हाथों से निकल गया और अनततः कुछ गांव के निवासीयों के साथ मिल कर सिक्खों ने इस पर भी अधिकार कर लिया तथा इस परीवार के सभी पुरुष तथा स्त्रियां क़ैद कर ली गईं परन्तु कुछ समय के पश्चात् सिक्खों ने उन को उस क्षेत्र से जाने की आज्ञा दे दी वे रियासत कपूरथला में चले गए तथा वहां लगभग सोलह साल रहे तथा इस के पश्चात् महाराजा रण्जीत सिंह का काल आरम्भ हुआ तथा उन्होंने सभी छोटे-छोटे राज्यों को अपने अधीन कर लिया तथा इस प्रबन्ध में हज़रत मिर्ज़ा साहब के पिता को भी उन की जागीर का बहुत सा भाग वापिस कर दिया तथा वे अपने भाईयों के साथ महाराजा की सेना में भर्ती हो गऐ तथा जब अंग्रेज़ी सरकार ने सिक्खों की सरकार को नष्ट कर दिया तो उनकी जागीर छीन ली गई परन्तु क़ादियान की धरती पर उन को मालिकाना अधिकार दे दिया गया।

इतिहास में आप का परिवारिक वर्णन

यह संक्षिप्त हालात लिखने के पश्चात् सर लेयपल गरीफन की पुस्तक "पंजाब चीफस" का वे भाग जो हज़रत मिर्ज़ा साहब के परीवार के बारे में है हम लिख देना उच्चित समझते हैं।

शहनशाह बाबर के राज्य काल के अन्तिम वर्ष अर्थात 1530 में एक मुग़ल हादी बेग निवासी समरकन्द अपना देश छोड़ कर पंजाब में आया तथा ज़िला गुरदासपुर में रहना आरम्भ कर दिया यह कुछ पढ़ा लिखा आदमी* था तथा क़ादियान के इर्द-गिर्द के सत्तर (70) गांवों का काज़ी था या मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया कहते हैं कि क़ादियान उस ने आबाद किया तथा इस का नाम इस्लामपुर काज़ी रखा जो बदलते बदलते क़ादियान हो गया कई पीढ़ियों तक यह परिवार शाही राज्य काल में सम्मानित पदों पर लगा रहा तथा केवल सिक्खों के राज्य में यह निर्धनता की दशा में रहा मिर्ज़ा ग़ुलाम मुहम्मद तथा उस का पुत्र अता मुहम्मद राम गढ़ीया तथा कन्हैया मिसलों से जिन के अधीकार में क़ादियान के इर्द गिर्द का क्षेत्र था लड़ते रहते थे अन्त में अपनी सारी जागीर को खो कर अता मुहम्मद बेगोवाल में सरदार फतेह सिंह अहलूवालीया की सुरक्षा में चला गया तथा बारह वर्ष तक शान्तिमय जीवन व्यतीत किया उस की मृत्यु पर रणजीत सिंह ने जो रामगढ़ीया मिसल के सारे क्षेत्र का अधिकारी हो गया था गुलाम मुरतज़ा को क़ादियान वापिस बुला लिया उस को पैतृक जागीर का एक बड़ा भाग उसे वापस दे दिया इस पर ग़ुलाम मुरतज़ा अपने भाईयों के साथ महाराजा की सेना में भर्ती हो गये तथा कश्मीर की सीमा तथा कई दूसरे स्थानों पर बहुत अच्छे सम्मान योग्य कार्य किये नौं निहाल सिंह, शेर सिंह तथा दरबारे लाहौर के राज्य काल में ग़ुलाम मुरतज़ा हमेशा सैनिक सेवा पर नियुक्त रहे 1841 में यह जरनैल व वनचुरा के साथ मन्डी तथा कुल्लू भेजा गया तथा जब 1843 में एक पैदल फौज का निगरान बना कर पिशावर भेजा गया। पेशावर हज़ारा के फसाद में उस ने कारनामें किये तथा जब 1848 में विद्रोह हुआ तो यह अपनी सरकार का नमक हलाल रहा तथा इस की ओर से लड़ा इस अवसर पर उस के भाई ग़ुलाम महीयुद्दीन ने भी अच्छी सेवायें की जब भाई महाराज सिंह अपनी सेना के लिए दिवान मूलराज की सहायता के लिए मुलतान की ओर जा रहा था तो ग़ुलाम महीयुद्दीन और दूसरे जागीरदारों लंगर खान, साहीवाल तथा साहब खान टवाना ने मुसलमानों को भड़काया तथा मिसर साहब दयाल सेना के साथ बाग़ीयों का मुक़ाबला किया तथा उन को पराजित किया तथा उन को दरीयाऐ चनाब के अतिरिक्त किसी ओर भागने का कोई मार्ग ना था जहां गऐ । छे: सौ से अधिक लोग डूब कर मर गये ।

** वास्तविक्ता में बहुत ज्ञानी और मोमन मरदे ख़ुदा था ।*

अलहाक* के अवसर पर इस परिवार की जागीर छीन ली गई परन्तु 700 रुप्ये की पेनशन ग़ुलाम मुरतज़ा तथा इस के भाईयों को दी गई तथा क़ादियान तथा इस के आस पास के देहातों पर उन का अधिकार रहा इस परीवार ने 1857 के विद्रोह के समय अच्छी सेवायें क़ी ग़ुलाम मुरतज़ा ने बहुत से आदमी भर्ती किए तथा उस का पत्र ग़ुलाम क़ादिर जरनल निकलसन साहब बहादुर की सेना में उस समय था जबकि (उन्होंने) वे तरयमू घाट पर 46 नेयूट अनफनद्री के विद्रोहीयों को जो सयालकोट से भागे थे उनको मौत के घाट उतार दिया। जनरल निकलसन साहिब बहादुर ने ग़ुलाम क़ादिर को एक प्रमाण पत्र दिया जिस में यह लिखा है कि 1857 में क़ादियान का परिवार ज़िला गुरदासपुर के दूसरे सभी परिवारों से अधिक नमक हलाल रहा ग़ुलाम मुरतज़ा जो एक योग्य हकीम था 1876 में उनकी मृत्यु हुई और 1876 में उसका पुत्र का पत्र ग़ुलाम क़ादिर उन का उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ ग़ुलाम क़ादिर की सहायता करने के लिए सदा तैयार रहता था उस के पास उन अफसरों के जिन का शासन कार्यों से सम्बन्ध था बहुत से प्रमाण पत्र थे वह कुछ समय तक गुरदासपुर में दफ्तर ज़िला का सुप्रीटंडन्ट रहा उस का इकलौता पुत्र छोटी आयु में मर गया तथा उस ने अपने भतीजे सुलतान अहमद को गोद ले लिया जो ग़ुलाम क़ादिर की मृत्यु अर्थात 1883 के पश्चात् परीवार का मुखिया माना गया मिर्ज़ा सुलतान अहमद ने उप-तहसीलदारी से सरकार की नौकरी अरम्भ की तथा अब ऐक्सट्रा इन्सटैन्ट है यह क़ादियान का नम्बरदार भी है निज़ामुद्दीन का भाई ईमामुद्दीन जो 1904 में मर गया दिल्ली के घेरे के समय हाडसन होरस (रसालाँ) में रसालदार था इस का पिता ग़ुलाम महीयुद्दीन तहसीलदार था।

यह वर्णन करना आवश्यक है कि ग़ुलाम अहमद जो ग़ुलाम मुरतज़ा का छोटा पुत्र था। मुसलमानों के सुप्रसिद्ध धार्मिक अहिमदिय्या सम्प्रदाय का संस्थापक हुआ यह धार्मिक व्यक्ति 1837 में पैदा हुआ इस को शिक्षा बहुत अच्छी मिली 1891 में उस ने इसलामी सिद्धान्तों के अनुसार महदी या मसीह मौऊद होने का दावा किया क्योंकि यह एक शिक्षित तथा मनतकी था इस लिए देखते ही देखते बहतु सारे लोग इस के मानने वाले हो गए तथा अब अहमदिया जमाअत की संख्या पंजाब तथा हिन्दुस्तान के दूसरे स्थानों में तीन लाख के लगभग बताई जाती है मिर्ज़ा अरबी

✱ अंग्रेज़ों के साथ पंजाब के मिल जाने पर।

फारसी तथा ऊर्दू की बहुत सी पुस्तकों का लेखक था जिन में उसके जिहाद की समस्या की तरदीद (वर्णन) किया तथा यह माना जाता है कि उन की पुस्तकों ने मुसलमानों पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला लम्बे समय तक यह बहुत कठिनाईयों में रहा क्योंकि धर्म के विरोधियों से उस का वाद विवाद तथा मुकद्दमे रहे परन्तु अपनी मृत्यु से पूर्व जो 1908 में हुई इस ने एक स्थान प्राप्त कर लिया कि वह लोगभी जो उस क विचारों के विरोधी थे उस का सम्मान करने लगे इस सम्प्रदाय का केन्द्रीय स्थान क़ादियान है जहां अन्जुमन अहमदिय्या ने एक बहुत बड़ा स्कूल खोला है तथा छापा खाना भी है जिस के द्वारा इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित समाचारों की घोषणा की जाती है। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) एक प्रसिद्ध हकीम मोलवी नुरुद्दीन हैं जो कुछ वर्ष महाराजा कश्मीर की नोकरी में रहा है इस परिवार का पूरे गांव क़ादियान पर जो कि एक बड़ा गांव है इस पर इसका अधिकार है तथा तीन साथ लगते गांवों पर भी कानूनी लिहाज़ से पांच प्रतिशत अधिकार है।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम का जन्म, बच्पन का समय तथा पिता जी का वर्णन

हज़रत मिर्ज़ा साहब के परिवार के संक्षिप्त हालात लिखने के पश्चात् हम आप के हालात का बर्णन करने की ओर ध्यान देते हैं जैसा कि आरम्भ में वर्णन किया गया है कि आप का जन्म 1836 या 1837 में हुआ था जो कि आप के पिता जी की उन्नति का समय था क्योंकि उन को उस समय जागीर के कुछ गांव तथा महाराजा रणजीत सिंह की सैनिक सेवा के कारण बहुत मान प्राप्त था परन्तु अल्लाह की इच्छा यह थी कि आप का पालन पोषण ऐसे वातावरण में हो जहां आप का ध्यान ख़ुदा ताअला की ओर हो इसी कारण आप के जन्म के तीन वर्ष पश्चात् ही महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के साथ ही सिक्ख राज्य का पतन हो गया इस पतन के साथ आप के पिता जी भी विभिन्न चिन्ताओं में पढ़ गऐ तथा पंजाब के अंग्रेजों के मिल जाने के अवसर पर उन की सम्पत्ति छीन ली गर्स तथा हज़ारों रुप्ये व्यय करने के पश्चात् भी वे अपनी सम्पत्ति वापित प्राप्त ना कर सके जिस का दुख उनके दिल पर सदा रहा हज़रत मिर्ज़ा साहब आपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि:-

"मेरे पिता जी अपनी असफलताओं के कारण अधिकतर दुखी तथा परेशान

रहते थे उन्होंने मुकदमों की पैरवी में लगभग सत्तर हज़ार रुप्ये व्यय किये जिस का परीणाम अन्त में असफलता ही था क्योंकि हमारे पूर्वजों के गांव लम्बे समय से हमारे अधिकार से निकल चुके थे उन का वापिस आना एक झूठा ख्याल था इस असफलता के कारण मेरे पिता जी बहुत अधिक ग़म दुख तथा बैचेनी में जीवन व्यतीत करते थे तथा मुझे उन हालात को देख कर पवित्र तबदीली ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होता था क्योंकि हज़रत वालिद साहिब का कठिन जीवन मुझे इस निष्काम सेवा के जीवन का पाठ देता था जो संसारिक मैल-कुचैल से पवित्र है। यद्यपि मिर्ज़ा साहब का कुछ गांव पर अधिकार बाकी था तथा अंग्रेज़ सरकार की ओर से कुछ वार्षिक ईनाम भी लगा था नौकरी के दिनों की पैनशन भी थी परन्तु जो कुछ वे देख चुके थे उस हिसाब से वह सब कुछ बहुत ही कम था इसी कारण वे सदा दुखी तथा परेशान रहते थे कि जिस कदर मैं ने इस अपवित्र संसार के लिए प्रयत्न किये हैं अगर वे प्रयत्न में ने धर्म के लिए किये होते तो आज में शायद कतबे वक्त था ग़ोसे वक्त होता तथा प्राय: यह शेर पढ़ते थे:

"उमर बगुज़शत नमान्दासत जज़ अय्यामे चन्द
बे के दर चार किसे सुबह कनम शामे चन्द"

और में ने कई बार देखा कि अपना बनाया हुआ शेर वे रो कर पढ़ते और वे यह है:

अज़देर तो ऐ किसे हरबे किसे
ने चसत उमीदम के बरदम ना उमीद

तथा कभी वे दरदे दिल से अपना यह शेर पढ़ा करते थे:

बआद दीयहद अश्शाक व ख़ाक पाऐ किसे
मरादे असत के दरख़ो तपद बजाऐ किसे

हज़रत ईज़्ज़त जल्लाहशाना (परमात्मा) के सामने ख़ाली हाथ जाने की हसरत दिन बदिन अपनी आयू के अन्तिम वर्षों में उन पर हावी होती गई थी अधिकतर पश्चाताप से कहा करते थे कि संसार की बेहूदा चिन्ताओं के लिए में ने अपनी उमर ना हक ज़ाऐ कर दी।

बचपन में ही अल्लाह की ईबादत का शौक

इस लेख से जो हज़रत मिर्ज़ा साहब ने अपने पिता की इस अवस्था के विष्य में लिखा है जिस में आप के पिता जी के बचपन से जबानी तक के युग का पता लगता है कि ख़ुदा ताअला ने ऐसे रंग में आप की तरबीयत (शिक्षा) की जिस के कारण संसार का प्रेम आप के मन में पैदा ही ना होने पाये, इस में कोई शक नहीं कि आप के पिता तथा बड़े भाई की संसारिक दशा उस समय भी ऐसी थी कि वे संसारिक तौर पर आदरणीय तथा धनवान कहलाते थे तथा अधिकारी उन की आज्ञा मानते तथा उन का सम्मान करते थे परन्तु फिर भी उन का संसार के पीछे पढ़ना तथा अपनी सारी आयु इस की प्राप्ती में व्यय कर देना परन्तु फिर भी उन का इस सीमा तक प्राप्त न कर सकता जिस सीमा तक वे इस पर परिवारिक अधिकार समझते थे इस पवित्र मन को जो अपने अन्दर किसी प्रकार की भी मैल न रखता था यह बता देने के लिए काफी था कि संसार कुछ दिन का है तथा आख़रत में ख़ुदा से मामला होगा उस ने अपने बचपने कि आयु से इस पाठ को ऐसे याद किया कि मृत्यु तक ना भुला पाया तथा दुनिया कई प्रकार के सुन्दर वस्त्र पहन कर उन के सम्मुख आई उस को उस के पथ से हटा देने का प्रयत्न किया लेकिन इस ने कभी इस की ओर आकर्शित ना हुआ सस से ऐसी जुदाई कर ली कि फिर इस से कभी ना मिला।

मिर्ज़ा साहब को अपने बचपन से ही अपने पिता जी के जीवन में एक ऐसा तलख़ नमूना देखने का अवसर मिला कि दुनिया से आप की तबीयत सरद (दुनिया से अलग होना) हो गई तथा जब आप की आयु बहुत ही छोटी थी तब भी आप की सारी इच्छाऐं अल्लाह की रज़ा की प्राप्ती में ही लगी रहती थीं आप के जीवनी लेखक शेख़ याकूब अली साहिब एक किस्सा जो आप की बहुत छोटी आयु में हुआ वर्णन करते हैं कि आप की आयु उस समय बहुत छोटी थी इस समय आप ने अपनी ही आयु की एक लड़की जिस से बाद में आप का विवाह हुआ कहा करते थे:

''नामुरादे दुआ कर कि ख़ुदा मेरे (मुझे) नमाज़ नसीब करे''

इन शब्दों से बहुत बचपन की आयु के हैं पता चलता है कि बहुत बचपन की आयु से आप के दिल में कैसी भावनाऐं थीं तथा आप की इच्छाओं का केन्द्र किस प्रकार ख़ुदा ही ख़ुदा हो रहा था साथ ही इस प्रतिभा का पता चलता है जो बचपन की आयु से आप के अन्दर पैदा हो गई थी क्योंकि इन शब्दों से पता चलता है कि इस समय भी आप अपनी सारी इच्छाओं को पूरा करने वाला ख़ुदा ताअला को ही

समझते थे तथा इबादत की शक्ति देना भी इस के ही अधिकार में समझते थे नमाज़ पढ़ने की इच्छा करना तथा इस इच्छा को पूरा करने वाला ख़ुद को ही जानना तथा फिर इस घर में पल कर जिस के छोटे बड़े दुनिया को ही अपना ख़ुदा समझ रहे थे एक ऐसी बात है जो सिवाऐ किसी ऐसे दिल के जो दुनिया की मिलावट से पवित्र हो तथा ससांर में बहुत बड़ा परीवर्तन पैदा कर देने के लिए ख़ुदा ताअ़ला का समर्थन हासिल हो नहीं निकल सकता।

शिक्षा प्राप्ती का समय

जिस समय में आप का जन्म हुआ था वह समय बहुत अज्ञानता का था। लोग शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सिक्खों के समय की बात तो यहां तक प्रसिद्ध है कि अगर किसी के नाम किसी मित्र का कोई पत्र आ जाता तो उस को पढ़वाने के लिए उस को बहुत प्रयत्न तथा मेहनत करनी पढ़ती तथा कई बार लम्बे समय तक पत्र पड़ा रहता था। बहुत से धनवान बिलकुल अशिक्षित थे लेकिन क्योंकि अल्लाह ताअला ने आप से बहुत बड़ा कार्य करवाना था इस लिए आप की शिक्षा का उस ने आप के पिता जी के मन में शौक डाल दिया तथा इन संसारिक चिन्ताओं जिन में वे थे इस अज्ञानता के समय में भी उन्हों ने अपनी सन्तान को समय की आवश्यक्ता अनुसार शिक्षा देने में लापरवाही ना की अत: आप जब छोटे ही थे आप के पिता ने एक अध्यापक आप की शिक्षा के लिए रखा जिस का नाम फज़ल इलाही था उन से हज़रत मिर्ज़ा साहब ने क़ुर्आन मजीद तथा फारसी की कुछ पुस्तके पढ़ीं इस के पश्चात् दस वर्ष की आयु में फज़ल अहमद नाम के अध्यापक रखे गए। यह अध्यापक बहुत नेक तथा धार्मिक आदमी था तथा जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब स्वंय लिखते हैं कि वे आप को मुहब्बत प्रेम तथा परिश्रम से शिक्षा देते थे इस अध्यापक से हज़रत साहब ने अरबी व्याकरण की कुछ पुस्तकें पढ़ीं इस के पश्चात् सत्रह अठरह वर्ष की आयु में मौलवी गुल अली शाह आप के अध्यापक रखे गए इन से अरबी व्यारकण, मनतक तथा हिकमत की कुछ पुस्तकें पढ़ीं तथा चिकित्सा विज्ञान की कुछ पुस्तके आपने अपने पिता जी से पढ़ीं जो एक योग्य हकीम थे। यह शिक्षा उस समय के अनुसार जिस में आप शिक्षा प्राप्त कर रहे थे एक बहुत बड़ी शिक्षा थी परन्तु वास्तव में उस कार्य के मुक़ाबले में जो आप ने करना था कुछ भी

ना था अत: हम ने कुछ वे व्यक्ति भी देखे हैं जो आप के साथ उन अध्यापकों से पढ़ते थे जिन को आप के पिता जी ने आप की शिक्षा के लिए रखा था वे बहुत कम बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले थे तथा उन को एक साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति से अधिक स्थान नहीं दिया जा सकता तथा जो अध्यापक आपकी क्षिशा के लिए रखे गए थे वे भी कोई बड़े ज्ञानी तथा अधिक शिक्षित नहीं थे क्योंकि उस समय शिक्षा बिलकुल कम थी तथा फारसी तथा अरबी की कुछ पुस्तकें पढ़ लेने वाले बहुत शिक्षित माना जाता था तथा जिन हालात के अधीन और जिन अध्यापकों के द्वारा आप को शिक्षा दी गई वे ऐसे थे कि उन के द्वारा आप को कोई ऐसी शिक्षा नहीं मिल सकती थी जो उस कार्य के लिए आप को त्यार कर देती जिस के करने के लिए अल्लाह ने आपको भेजा था। हां इतना उस शिक्षा का परिणाम आवश्य हुआ कि आप को फारसी, अरबी आ गई तथा फारसी अच्छी तरह, अरबी कुछ कुछ आप बोलने भी लगे इस से अधिक आप ने कोइ भी शिक्षा प्राप्त ना की तथा धार्मिक शिक्षा तो किसी अध्यापक से भी प्राप्त ना की। हां आप को अध्ययन करने का बहुत चाव था तथा आप अपने पिता जी के पुस्तकालय में इतना व्यस्त रहते थे कि कई बार तो आप के पिता जी को एक तो इस कारण कि आप के स्वास्थ्य को हानि ना पहुंचे तथा एक इस कारण कि आप इस ओर से हट कर उन के कार्य में उन की सहायता करें आप को पढ़ने से रोकना पढ़ना था।

नौकरी का समय तथा ईसाईयों से वाद-विवाद

जब आप शिक्षा प्राप्त कर चुके तो उस समय ब्रिटिश सरकार का पंजाब पर अधिकार हो चुका था विद्रोह का समय भी बीत चुका था तथा हिन्दुस्तानी इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि अब इस सरकार की नौकरी में ही सम्मान है इस कारण विभिन्न सभ्यक परिवारों के युवक इस की नौकरी करने लगे थे ऐसे समय में तथा इस बात को जान कर कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब का मन ज़मीनदारी के कार्यों में नहीं लगता अपने पिता जी के सुझाव से आप स्यालकोट नौकरी प्राप्त करने को गए तथा वहां डिप्टी कमिश्नर साहिब ने दफ़्तर में नौकरी प्राप्त कर ली परन्तु अधिकतर समय धार्मिक अध्ययन में ही व्यतीत करते तथा नौकरी के बाद के समय में या तो आप स्वंय अध्यन करते या दूसरे लोगों को शिक्षा देते या धार्मिक बात चीत में भाग

लेते थे तथा इस समय भी आप की परहेज़गारी तथा ख़ुदा ख़ौफी का इतना प्रभाव था कि बावजूद इस के कि आप युवक थे तथा आप की आयु केवल अठाईस वर्ष थी मगर वृद्ध व्यक्ति मुसलमानों में से भी तथा हिन्दुओं में भी आप का सम्मान करते थे परन्तु उस समय भी आप एकान्त स्वभाव के थे तथा आपने घर से बाहर कम जाते तथा अधिकतर समय वहीं व्यतीत करते ईसाई मिशन उन दिनों में पंजाब में नया नया आया था तथा मुसलमान उन के आक्रमणों से अंजान थे तथा अकसर ईसाईयों से हार जाते थे परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब की जिस समय भी ईसाईयों से बात चीत हुई उन को नीचा देखना पड़ा अत: पादरियों में से जो लोग सच्चे थे वे धार्मिक भिन्नता रखते हुऐ भी आप का सम्मान करते! अत: आप का जीवनी लेखक लिखता है कि रैवरनड, बटलर एम.ऐ जो स्यालकोट के मिशन में कार्य करते थे तथा जिन से हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बहुत से वाद विवाद होते रहते थे जब विलायत वापस जाने लगे तो स्वंय कचहरी में आप से मिलने के लिए आये तथा जब डिप्टी कमिश्नर साहिब ने पूछा कि वे किस लिए आए हैं तो रैवरन्ड ने कहा कि केवल हज़रत मिर्ज़ा साहिब से मिलने के लिए तथा जहां आप बैठे थे वहीं सीधा चले गए तथा कुछ समय बैठ कर वापिस चले गए। यह उस समय की बात है कि जब ब्रिटिश सरकार की नई-नई विजय को पादरी लोग अपनी विजय समझ रहे थे तथा वे इतने घमण्डी हो गए थे कि उन दिनों जो पुस्तकें इसलाम के विरुद्ध लिखी गईं उन को पढ़ने से पता चलता है कि पादरियों ने उस समय शायद यह सोच लिया था कि कुछ ही दिनों में सारे मुसलमानों को पकड़ कर सरकार बलपूर्वक ईसाई बना देगी तथा वे इस्लाम तथा ईस्लाम के संस्थापक के लिए सख़्त से सख़्त शब्दों का प्रयोग करने में ज़रा भी संकोच ना करते तथा यहां तक कि कुछ अकलमन्द युरोपियन लोगों को ही उन पुस्तकों को देख कर लिखना पड़ा कि उन लेखों के कारण यदि दोबारा सन 57 की तरह विद्रोह हो जाए तो कोई आश्चर्य जनक बात ना होगी तथा यह स्थिति उस समय तक रही जब तक कि इसाई पादरियों को विश्वास ना हो गया कि हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकार है ना कि पादरियों की और यह कि महारानी विकटोरिया की सरकार बल पूर्वक ईसाई बनाने की नहीं है तथा वह यह कभी पसंद नहीं करती कि किसी धर्म को अनुचित ढंग से दिल दुखाया जाऐ तथा उस समय के ईसाई तथा मुसलमानों के सम्बन्ध बहुत खिंचे हुऐ थे तथा पादरियों का स्वभाव केवल उन्हीं लोगों के लिए

अच्छा था और जो उनकी बातों की पुष्टि करते थे और जो उन के आगे जवाब दे दें उन के विरुद्ध उन का जोश बढ़ जाता था लेकिन बावजूद इस के कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब धर्म के प्रति ख़ुद्दार थे तथा धार्मिक वाद विवाद में किसी से दबते नहीं थे रेवरनड बटलर आप के अच्छे स्वभाव, संयम तथा सतसंकल्प से बहुत प्रभावित थे तथा इस बात का अनुभव करते थे कि यह मनुष्य मेरे शिकार नहीं हां सम्भव है कि मैं इस का शिकार हो जाऊं तथा उस स्वभाविक घृणा के बावजूद जो एक शिकारी को शिकारी से होती है वो दूसरे धार्मिक वाद-विवाद करने वालों की तुलना में मिर्ज़ा साहिब ने विभिन्न सलूक करने पर मजबूर हुऐ तथा जाते समय कचहरी में ही आप से मिलने के लिए आ गये और मिले बिना जाना पसंद नहीं किया।

नौकरी छोड़ना तथा मुकदमें की पैरवी

लगभग चार वर्ष आप स्यालकोट में नौकरी करते रहे परन्तु बहुत अधिक मजबूरी के साथ अन्त में पिता जी के लिखने पर जल्दी ही त्याग तत्र दे दिया तथा वापिस आ गए तथा पिता जी की आज्ञा के अनुसार उन के ज़मीनदारी के मुकदमों की पैरवी (देख भाल) में लग गए परन्तु आप का मन इस कार्य में हनीं लगता था क्योंकि आप अपने माता पिता के बहुत आज्ञा कारी थे इसी कारण आप अपने पिता जी की आज्ञा को टालते तो ना थे परन्तु उस काम में आप का मन बिल्कुल नहीं लगता था अत: उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुक्दमों में हार कर आते तो आप के चेहरी पर ख़ुशी के चिन्ह होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय हो गई है पूछने पर ज्ञान होता था कि हार गए हैं जब कारण पूछा जाता तो कहते थे कि हम ने जो करना था कर दिया अल्लाह की इच्छा यही थी तथा इस मुकदमें के समाप्त होने से कुछ अवकाश तो मिल गया अल्लाह की याद में लगे रहने का समय मिलेगा यह समय आप का अजीब असंमजस का समय था पिता जी चाहते थे कि आप या तो ज़मीनदारी के कार्य में लग जाऐं या कोई नोकरी कर लें तथा आप इन दोनों बातों से सहमत ना थे तथा इसी कारण आप को अधिकतर कटाक्श तथा फटकार सुननी पड़ती थी जब तक आप की माता जी जीवित रहीं आप पर एक ढाल के समान रहीं परन्तु उन की मृत्यु के पश्चात् आप अपने पिता जी तथा भाई की भर्त्सना का अधिकतर शिकार हो जाते तथा कभी कभी

वे समझते थे कि संसारिक कार्यों से अलग होने का कारण सुसती है अत: आप फ़र्माया (कहा) करते थे कि कभी-कभी आप के पिता जी बहुत परेशान हो जाया करते थे। तथा कहते थे कि मेरे बाद इस लड़के का निर्वाह किस प्रकार होगा तथा इस बात का उन को बहुत दुख था कि यह आपने भाई पर निर्भर रहेगा तथा कभी-कभी वे आप के अधिक पढ़ने पर चिढ़ कर आप को मुल्लां भी कह देते थे तथा फरमाते थे कि यह हमारे घर में मुल्ला कहां से पैदा हो गया परन्तु बावजूद इस के उन के मन में स्वंय आप का प्रभाव था तथा जब कभी वे अपनी संसारिक असफलता को याद करते तो धार्मिक बातों में आप को लीन देख कर प्रसन्न होते थे तथा उस समय फरमाते थे कि असल कार्य तो यह ही है। जिस में मेरा पुत्र लगा हुआ है परन्तु क्योंकि उन की सारी आयु संसारिक कार्यों में ही व्यतीत हुई थी इसी कारण पश्चाताप उन के मन में रहता परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब इस बात की परवाह ना करते थे तथा किसी किसी समय अपने पिता जी को भी क़ुर्आन तथा हदीस सुनाया करते थे तथा यह एक अद्‌भुत दृष्य था कि पिता तथा पुत्र दो अलग अलग कार्यों में लगे हुऐ थे तथा दोनों में से हर एक दुसरे को अधीन करना चाहता था पिता चाहता था कि किसी प्रकार पुत्र को अपने विचारों के अनुसार बना ले तथा संसारिक सम्मान की प्राप्ती में लगा दे तथा पुत्र चाहता था कि अपने पिता को संसारिक कार्यों से मुक्ती दिला कर अल्लाह ताअला से प्यार करने में लगा दे अत: यह अद्‌भुत दिन थे जिन का खींचना कलम का कार्य नहीं प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार अपने मन में इस का नकशा खींच सकता है। इस समय आप के सम्मुख फिर नौकरी का प्रश्न उत्पन्न हुआ तथा रियासत कपूरथला के शिक्षा विभाग का अफसर बनाने का र्निणय हुआ परन्तु आप ने मना कर दिया तथा अपने पिता जी को दुखी देख कर इस बात को ही पसंद किया कि घर पर ही रहें तथा उन के कार्यों में जहां तक हो सके हाथ बटाऐं। जैसा कि पहले बताया गया है कि आप का मन उस कार्य में भी नहीं लगता था परन्तु आप अपने पिता जी की आज्ञा अनुसार उन के अन्तिम दिनों को सुखी बनाने के लिए इस कार्य में अवश्य लगे रहते थे अत: हार जीत से आप को लगाव न था।

एक मुकद्दमें में निशाने ईलाही

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाहे इस समय में अपने पिता जी की सहायता के लिए उन के संसारिक कार्यों में लगे हुए थे परन्तु आप का मन किसी और तरफ था। तथा "दसत दर कार दिल बा यार"* की उदाहरण बने हुये थे मुकदमों से थोडा समय मिलता तो अल्लाह ताअला की याद में लीन हो जाते तथा इन यात्राओं में जो आप को उन मुकदमों के समय में करनी पड़ती आप एक समय भी नमाज़ को पढ़ने में देर ना होने देते। बल्कि अपने समय पर सारी नमाज़ें पढ़ते अत: मुकदमों के समय भी नमाज़ को ना छोड़ते अत: एक बार तो ऐसा हुआ कि आप एक आवश्यक मुकदमें के लिए जिस का प्रभाव बहुत सारे मुकदमों पर पड़ना था तथा जिस का आप के पक्ष में हो जाने से आप के बहुत सारे अधिकार सुरक्षित हो जाते थे अदालत गए उस समय कोई आवश्यक मुकदमा चल रहा ता उसमें देर हो गई तथा नमाज़ का समय आ गया जब आप ने देखा कि मेजिस्ट्रेट तो मुकदमें में व्यस्त है तथा नमाज़ का समय गुज़रत जा रहा है तो आप ने इस मुकदमें को खुदा पर छोड़ दिया तथा स्वंय एक ओर जा कर वज़ू (मुंह हाथ धोना) किया तथा वृक्षों की छाया तले नमाज़ पढ़नी आरम्भ कर दी जब नमाज़ आरम्भ कर दी तो अदालत से आप के नाम की आवाज़ पड़ी आप आराम से नमाज़ पढ़ते रहे तथा इस ओर ध्यान न दिया तथा जब नमाज़ पढ़ चुके तो विश्वास था कि मुकदमें में विरोधी को एक तरफ की डिगरी मिल गई होगी क्योंकि अदालतों का यह नियम है कि जब एक पक्ष उपस्थित न हो तो विरोधी पक्ष को डिगरी दे दी जाती है। इसी ध्यान में अदालत में पहुंचे अत: जब आप अदालत पहुंचे तो पता लगा कि मुकदमें का फैसला हो चुका है क्योंकि अदालत का फैसला जानना आवश्यक था इसी लिए जा कर पुछा तो पता लगा कि मेजिस्ट्रेट ने जो कि एक अंग्रेज़ था काग़ज़ात पर ही फैसला कर दिया तथा डिगरी आप के पक्ष में दी। इस प्रकार खुदा ने आप की ओर से वकालत की अत: आप इन संसारिक कार्यों में इसी प्रकार व्यस्त थे जिस प्रकार एक मनुष्य से ऐसा कार्य करवाया जाऐ जो वह ना करना चाहता हो जब कि वह कार्य आपके लाभ का था, क्योंकि आप के पिता जी की सम्पत्ति का सुरक्षित होना वास्तव में आप की सम्पत्ति का सुरक्षित होना था क्योंकि आप उन के उत्तराधिकारी थे अत: आप का बुद्धिमान तथा व्यस्क होने पर भी इस कार्य में मन ना लगना यह बात स्पष्ट करता है कि आप संसार से पूर्ण रूप से

** हाथ काम में, दिल अल्लाह की याद में ।*

अलग थे तथा खुदा ताअला को पाना ही आप का उद्देश्य था।

परिश्रम की आदत

बावजूद इस के कि आप का मन संसारिक कार्यों में नहीं लगता था आप आलसी नहीं थे बल्कि बहुत अधिक परिश्रमी थे और एकान्त स्वभाव के होने के बावजूद परिश्रम से घबराते नहीं थे तथा कई बार ऐसा होता था कि आप को जब किसी यात्रा पर जाना होता तो यात्रा का घोड़ा नौकर के हाथ आगे भेज देते तथा आप पैदल बीस पच्चीस कोस की यात्रा कर के आप अपनी मन्ज़िल पर पहुंच जाते। अधिकतर आप पैदल ही यात्रा करते तथा सवारी पर कम चढ़ते थे तथा पैदल चलने की आदत आप को अन्तिम समय तक रही। सत्तर वर्ष से अधिक आयु में जब कि आप को कुछ सख़त बीमारीयां* लग गई थीं। अधिकतर प्रतिदिन सैर को जाते थे; चार पांच मील पैदल फिर कर आते थे, तथा कभी सात मील फिर आते थे तथा बुढ़ापे से पहले के बारे में आप वर्णन करते थे कि कुछ समय प्रात: की नमाज़ से पूर्व उठ कर (नमाज़ का समय सूर्य निकलने से सवा घण्टा पहले होता है) सैर के लिए चल पड़ते थे तथा बडाला तक पहुंच कर (जो बटाला सड़क पर कादियान से लगभग साडे पांच मील पर एक गांव है) प्रात: की नमाज़ का समय होता था।

मकालम-ए-इलाहिय्या का आरम्भ

(अल्लाह से बातचीत का आरम्भ)

आप की आयू लगभग चालीस वर्ष की थी जब्कि 1876 में आप के पिता जी एक बार बीमार हुऐ और उन की बीमारी बहुत अधिक भयानक ना थी परन्तु हज़रत मसीह मौऊद को अल्लाह ताअला ने इलहाम (आकाशवाणी) के द्वारा बताया कि अत्तारिको व मत्तारिक अर्थात रात के आने वाले की सौगन्ध तू क्या जानता है रात को क्या आने वाला है तथा साथ ही बताया गया कि इस इलहाम (ईश्वर वाणी) में आप के पिता जी की मृत्यु की सूचना दी गई है जो कि मग़रिब के पश्चात होगी। अर्थात शाम के बाद अत: हज़रत साहिब को इस समय से पूर्व ही लम्बे समय से भले

✱ इस आयु में आपका सर चक्राता था तथा शूगर थी।

स्वप्न आ रहे थे जो अपने समय पर बहुत सफाई से पूरे हुऐ थे तथा जिन के गवाह हिन्दु तथा सिख्ख भी थे तथा अब तक कुछ इन में से जीवित हैं परन्तु आकाशवाणी में से इन में यह पहली आकाशवाणी है जो आप को हुई तथा इस के द्वारा ख़ुदा ताअला ने अपने प्रेम के साथ आप को बताया कि तेरे संसारिक पिता की मृत्यु होती है परन्तु आज से मैं तेरा आसमानी बाप होता हूं। अत: पहली आकाशवाणी (इलहाम) जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लसलाम को हुआ यही था जिस में आप को आप के पिता जी की मृत्यु की सूचना दी गई थी। इस सूचना पर आप के मन में दुख होना ही था अत: आप को इस सूचना से दूख हुआ तथा मन में ख़याल गुज़रा कि अब हमारा निर्वाह किस प्रकार होगा जिस पर दूसरी बार फिर इलहाम हुआ तथा आप को अल्लाह ताअला ने हर प्रकार से तसल्ली दी इस बात को मैं इस स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) के शब्दों में लिख देना उचित समझता हूं आप लिखते हैं:

आप के पिता जी की मृत्यु तथा अल्लाह का आप पर हाथः

''जब मुझे यह सूचना दी गई कि मेरे पिता जी की सूर्य डूबने के पश्चात् मृत्यु हो जाऐगी तो स्वभाविक तौर पर मुझे इस सूचना के सुन ने से दुख पहुंचा, क्योंकि हमारे निर्वाह के अधिकतर साधन उन से ही सम्बन्धित थे तथा वे सरकार अंग्रेज़ी की ओर पैनशन प्राप्त करते थे। इसी प्रकार एक भारी रकम पुरस्कार के रूप में भी पाते थे जो कि उनके जीवन से ही सम्बन्धित थे इस कारण यह ख़्याल हुआ कि उन की मृत्यु के पश्चात् क्या होगा तथा मन में भय पैदा हुआ कि शायद तंगी तथा दुख के दिन हम पर आऐंगे तथा यह सारा ख़्याल बिजली की चमक की तरह एक सैकिण्ड से भी कम समय में गुज़र गया तथा उसी समय निद्रा की अवस्था में यह दूसरा इलहाम हुआ-

अलै सल्लाहो बेकाफ़िन अब्दाहू

अर्थात क्या ख़ुदा अपने सेवक के लिए काफी नहीं है।

इस इलहाम के साथ दिल ऐसा मज़बूत हुआ कि जैसे एक सख़त दुख दायक घाव किसी मरहम से एक दम अच्छा हो जाऐ। जब मुझ को इलहाम हुआ कि ''अलै सल्लाहो बेकाफ़िन अब्दाहू'' तो में ने उसी समय समझ लिया कि अल्लाह ताअला

मुझे व्यर्थ नहीं जाने देगा तब में ने एक हिन्दु खतरी मलावा मल को जो कादियान का रहने वाला है तथा अभी तक जीवित है वह इलहाम लिख कर दिया तथा सारा किस्सा सुनाया तथा उस को अमृत्सर भेजा कि वह हकीम मौलवी मुहम्मद शरीफ कलानोरी के द्वारा इस को नगीना में खुदवा कर तथा मुहर बनवा कर ले आऐ तथा मैं ने इस हिन्दु को इस कार्य के लिए केवल इस लिए नियुक्त किया कि वह इस बहुत बड़ी भविष्य वाणी का गवाह हो जाऐ तथा मौलवी साहिब के द्वारा वह अंगूठी पांच रुप्य में बन कर मेरे पास पहुंच गई जो अब तक मेरे पास है तथा जिस का चिन्ह यह है-

अत: जिस दिन हज़रत साहिब के पिता जी की मृत्यु हुई उस दिन मग़रिब (शाम का समय) से कुछ घण्टे पूर्व इनकी मृत्यु की सूचना आप को दे दी गई तथा बाद में परमात्मा ने धीरज बंधा दिया कि घबराओ नहीं अल्लाह ताअला ख़ुद ही तुम्हारा प्रबन्ध कर देगा जिस दिन यह इलहाम हुआ उसी दिन शाम को बाद मग़रिब आप के पिता जी का देहान्त हो गया तथा आप के जीवन का एक नया युग आरम्भ हुआ।

कुछ कठिनाईयां तथा आप की दृढ़ता

आप के पिता जी की सम्पत्ति कुछ मकान तथा दुकानें बटाला अमृत्सर तथा गुरदासपुर में थीं तथा कुछ मकान दुकानें तथा ज़मीन क़ादियान में थीं क्योंकि आप दो भाई थे इसलिए इसलामी व मुल्की कानून के अनुसार वह आप दोनों के हिस्सा में आती थी। क्योंकि आप का हिस्सा आप के निर्वाह के लिए काफी था परन्तु आप ने अपने बड़े भाई से सम्पत्ति का बटवारा नहीं कराया तथा जो कुछ वे देते उसी पर निर्वाह करते इस प्रकार पिता के स्थान पर आप के बड़े भाई हो गये परन्तु क्योंकि वे कर्मचारी थे तथा गुरदासपुर में रहते थे इसी कारण उस समय आप को बहुत कठिनाई हो गई यहां तक कि जीवन की आवश्यक चीज़े खरीदने में भी आप को कठिनाई होती थी तथा यह कठिनाई आप को आप के भाई की मृत्यु तक होती रही तथा यह आप के लिए परीक्षा का समय था तथा आप ने उन दिनों में धीरज से काम लिया वह आप के ऊंचे दर्जे का खुला निशान है, क्योंकि बावजूद इस के कि आप का आप के पिता जी की सम्पत्ति पर बराबर का हिस्सा था फिर भी आप ने उन का संसार से प्रेम देख कर उनसे हिस्सा ना मांगा। खाने तथा कपड़े पर ही सबर के साथ

र्निवाह किया । अत: आप के भाई भी अपने स्वभाव के अनुसार आप की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न करते थे तथा आप से एक सीमा तक प्रेम भी करते थे एवं सम्मान भी करते थे परन्तु बावजूद इस के क्योंकि वे संसारिक कार्यों में लगे थे तथा हज़रत साहिब संसार से पूर्ण रूप से अलग थे इसलिए वे आप को संसारिक आवश्यकताओं से अनभिज्ञ तथा आलसी समझते थे तथा कुछ समय इसी बात पर अफसोस भी करते थे कि आप किसी कार्य की ओर ध्यान नहीं देते अत: एक बार किसी अखबार के मंगवाने के लिए बहुत छोटी रकम मंगवाई तो उन्होंने बावजूद इस के कि वे आप की सम्पत्ति पर कब्ज़ा किये हुये थे देने से इन्कार कर दिया तथा कहा कि यह अपव्यय है। कार्य तो कुछ करते नहीं तथा बैठे-बैठे पुस्तकों तथा समाचार पत्रों का अध्यन करते रहते हैं अत: आप के भाई संसारिक कार्यों में व्यस्त होने पर भी आप की आवश्यकताओं को ना स्वंय समझ सकते थे तथा ना ही उन को पूरा करने पर ध्यान देते थे जिस के कारण आप को बहुत परेशानी होती ती परन्तु इस से भी अधिक दुख दायक बात यह थी कि आप के भाई भी अधिकतर क़ादियान से बाहर रहते थे तथा उन की अनुपस्थिति में उन के अधिकारी आप को कष्ट देने के यत्न करते रहते थे ।

आपकी तपस्या, और इसलाम की सेवा

इन्हीं दिनों में आप को बताया गया कि अल्लाह की रज़ा को प्राप्त करने के लिए आप को कुछ तपस्या की भी आवश्यकता है तथा यह कि आप को रोज़े (व्रत) रखने चाहिए। इस आज्ञा के अनुसार आप ने लगातार छे: मास के रोज़े रखे तथा अधिकतर ऐसा होता था कि आप का खाना जब घर से आता तो आप उसे गरीबों में बांट देते तथा जब खोल कर घर से खाना मंगवाते तो वहां से इन्कार हो जाता तथा आप केवल पानी पर या ऐसी ही किसी चीज़ पर समय गुज़ारते तथा सुबह फिर ऐसे ही रोज़ा रख लेते अत: यह कि यह समय आप के लिए बड़ी कठिनाइयों का समय था जिसे आप ने धीरज से व्यतीत किया कठिन से कठिन समय में भी आप ने कभी भी सम्पत्ति से अपने अधिकार लेने की मांग ना की ना केवल रोज़ों के दिनों में यूं भी आप की आदत थी कि अधिकतर अपना भोजन गरीबों में बांट देते थे तथा कभी कभी एक रोटी का आधा जो एक छटांक से अधिक नहीं हो सकता आप के लिए

बचता था । आप उसी पर निंवाह करते थे कभी कभी केवल चने भुनवा कर खा लेते थे तथा अपना भोजन गरीबों में बांट देते थे अत: कई ग़रीब ग़रीब आप को साथ रहते थे । दोनों भाईयों की सभाओं में ज़मीन आसमान का अन्तर था एक भाई की सभा में सब खाते पीते लोग इकट्ठे होते थे तथा दूसरे भाई की सभा में ग़रीबों तथा ज़रूरत मंदों का समूह रहता था जिन को वह अपने थोड़े से खाने में साथ शामिल करता था तथा अपनी जान पर उन को प्राथमिकता देता था।

इसी समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की सेवा के लिये प्रयत्न आरम्भ किये तथा इसाईयों तथा आरीयों के मुकाबले में लेख लिखने आरम्भ किये जिन के कारण आप का नाम स्वंय ही गुमनामी के अंधेरे से निकल कर सम्मान के मैदान में आ गया परन्तु आप स्वंय उसी अकेले पन में थे तथा बाहर कम निकलते थे तथा मस्जिद के एक कमरे में जो केवल 5 x 6 फुट लम्बा तथा चौडा था रहते थे। और अगर कोई आदमी मिलने को आ जाता तो मस्जिद से बाहर आ कर बैठ जाते या घर में आ कर बैठे रहते अत: इस समय में आप का नाम तो बाहर निकलना आरम्भ हुआ परन्तु आप बाहर ना निकले बल्कि उसी ऐकान्त में जीवन व्यतीत करते रहे। इन तपस्याओं के दिनों में आप को लगातार इल्हाम होने आरम्भ हो गये। और कुछ परीक्षा की बातों से सम्बन्धित भी समाचार मिलते रहे जो अपने समय पर पूरे हो जाते तथा आप के ईमान के अधिक होने के कारण होते और आप के मित्र जिन में कुछ हिन्दु तथा कुछ सिख्ख होते थे इन बातों को देख-देख कर चकित होते थे ।

विज्ञापन पुस्तक बराहीने अहमदिया

सर्व प्रथम तो आप ने केवल समाचार पत्रों में लेख देने आरम्भ कर दिये परन्तु जब देखा कि इस्लाम के शत्रु अपने आक्रमणों में बढ़ते जाते हैं और मुसलमान उन आक्रमणों का मुकाबला ना कर के पीछे हट रहे हैं तो आप के दिल में इस्लाम के प्रेम ने जोश मारे और आप ने अल्लाह ताअला की आकाशवाणी (इल्हाम और वही) संदेश के अनुसार मामूर होकर इरादा किया कि एक ऐसी पुस्तक लिखें जिस में इस्लाम की सच्चाई के उन सिद्धान्तों का वर्णन किया जाये जिन के मुकाबले में विरोधी विनीत हों तथा उन को आगे इस्लाम का मुकाबला करने का साहस ना हों

अगर वे मुकाबला करे तों हर मुसलमान उन के आक्रमणों को असफल कर सके इस विचार के साथ आप ने वह सम्मान योग्य पुस्तक लिखनी आरम्भ की जो बराहीन अहमदिया के नाम से प्रसिद्ध है और जिस का उदाहरण किसी मनुष्य के लेख में नहीं मिलता जब एक हिस्सा लेख का पूर्ण हो गया तो उस को प्रकाशित करने के लिए आप ने विभिन्न स्थानों पर लोगों को प्रेरित किया तथा कुछ लोगों की सहायता से जो आप के लेखों के कारण पहले ही आप की योग्यता के सहमत थे इस का पहला हिस्सा जो केवल विज्ञापन के रूप में था प्रकाशित किया गया।

इस हिस्से का प्रकाशित होना था कि देश में शोर पड़ गया और यद्धिपि पहला हिस्सा केवल पुस्तक का विज्ञापन था परन्तु उस में भी सच्चाई के साबित करने के ऐसे सिद्धान्त बताए गए थे कि प्रत्येक मनुष्य जिस ने उसे देखा इस पुस्तक की बढ़ाई को मानने लग गया इस विज्ञापन में आप ने यह भी शर्त रक्खी थी कि अगर वे गुण जो आप इस्लाम के पेश करेंगे। वही किसी और धर्म का अनुयायी अपने धर्म में दिखा दे या उन का आधा बल्कि चौथा हिस्सा ही अपने धर्म में साबित कर दे तो आप अपनी सब सम्पत्ति जिस का मूल्य दस हज़ार रुप्य के करीब होगा उस पुरस्कार के रूप में देंगे (यह एक ही मौका है जिस में आप ने अपनी सम्पत्ति से उस समय लाभ उठाया) तथा इस्लाम के गुणों को प्रमाणित करने के लिये पुरस्कार नियुक्त किया ताकि विभिन्न धर्मों के अनुयायी किसी प्रकार मुकाबले में आ जाऐं तथा इस प्रकार इस्लाम की विजय प्रमाणित हो गई।

भविष्यवाणियों और आकाशवाणियों की अधिकता

इस पुस्तक में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने इल्हाम भी लिखे हैं जिन में से कुछ का उल्लेख करना यहां उचित होगा क्योंकि बाद की घटनाओं से उन के गल्त या सही होने का पता चलता है।

''दुनिया में एक नज़ीर* आया, पर दुनिया ने उसे कबूल नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे कबूल करेगा और बड़े जोरदार हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।''

(यातीका मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक व यातूना मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक)

''बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढ़ेगें''। ये वह इल्हाम हैं जो बराहीने अहमदीया

* *ख़ुदाई अज़ाबों से डराने वाला ।*

1884 ई. में प्रकाशित की गई थी जबकि आप संसार में एक असहाय व्यक्ति की स्थिति में थे परन्तु इस पुस्तक का निकलना था कि आप की प्रसिद्धी भारत में दूर-दूर तक फैल गई और बहुत से लोगों की नज़रें बराहीन-ए-अहमदिया के लेखक की ओर लग गई कि यह इस्लाम का खेवय्या होगा और इसे शत्रुओं से बचाएगा और ये विचार उन का ठीक था। परन्तु ईश्वर इसे और रंग में पूरा करने वाला था। और घटनाएं यह प्रमाणित करने वालीं थीं कि जो लोग इन दिनों इस पर प्राण न्योछावर करने के लिए तैय्यार हैं वही उस के लहू के प्यासे हो जाएंगे और हर प्रकार से उस को हानी पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे और आप की स्वीकृति किसी मानवीय सहायता के सहारे नहीं बल्कि ख़ुदा ताअला के ज़ोरदार हमलों द्वारा निश्चित थीं।

आप के भाई साहिब का देहान्त

1884 ई. में आप के भाई साहिब का भी देहान्त हो गया और क्योंकि उन की सन्तान नहीं थी इसलिए उन के उत्तराधिकारी भी आप ही थे परन्तु उस समय भी आप ने उन की विधवा की तसल्ली के लिए सम्पत्ति पर अधिकार नहीं किया और उनकी प्रार्थना पर आधा भाग तो मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब के नाम पर लिख दिया जिन्हें आप की भाभी ने रस्मी तौर पर गोद लिया हुआ था। आप ने गोद लेने के प्रश्न पर साफ लिख दिया कि इस्लाम में जाएज़ नहीं परन्तु मरहूम मिर्ज़ा गुलाम कादर की विधवा का दिल रखने और देख रेख के लिए अपनी सम्पत्ति का आधा भाग प्रसन्नता से उन्हें दे दिया, और बाकी आधे पर भी स्वंय अधिकार न किया वल्कि एक लम्बे समय तक आप के सम्बन्धियों के अधिकार में रहा।

दूसरा विवाह, लोगों का आपकी ओर झुकाव दावा का ऐलान

भाई साहिब के देहान्त के डेढ़ वर्ष पश्चात् आपने अल्लाह के इल्हाम के अधीन दूसरा विवाह दिल्ली में किया। क्योंकि बराहीन-ए-अहमदिया प्रकाशित हो चुकी थी अब कोई कोई व्यक्ति आप को देखने के लिए आने लगा था और क़ादियान जो संसार से बिल्कुल एक किनारे पर है महीने दो महीने पश्चात् किसी न किसी अतिथि के लिए ठहरने का स्थान बन जाता था। और क्योंकि लोग बराहीन-ए-

अहमदीया से परिचित होते जाते थे इसलिए आप की प्रसिद्धी बढ़ती जाती थी। और यह बराहीन-ए-अहमदीया ही थी जिसे पढ़ कर वह महान व्यक्ति जिस की योग्यता और ज्ञानता को मित्र और शत्रु दोनों मानते थे और जिस समूह में वह बैठता था चाहे योरपियों का हो अथवा देसियों का अपनी योगयता का सिक्का उन से मनवाता था । आपका आशिक हो गया और स्वंय हज़ारों का माशूक होने के अतिरिक्त आप का प्रेमी होना उसने अपना गर्व समझा। मेरे भाव आदरणीय हज़रत मौलाना नूरूद्दीन साहिब से है जो बराहीन-ए-अहमद्दीया के प्रकाशन के समय जम्मू में महाराजा साहिब के प्रमुक्ख वैद्य थे। उन्होंने वहां ही बराहीन-ए-अहमद्दीया पढ़ी और ऐसे मोहित हुए कि अपने अन्तिम समय तक हज़रत साहिब अ. का दामन ना छोड़ा।

बैअतों का आरम्भ और प्रथम बैअत

इस प्रकार बराहीन-ए-अहमद्दीया का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ना आरम्भ हुआ और कुछ लोगों ने आप की सेवा में प्रार्थना की कि आप बैअत लें परन्तु आप ने बैअत लेने से सदा इन्कार किया और यही उत्तर दिया कि हमारे सब कार्य खुदा ताअला के हाथ में हैं। यहां तक कि 1888 ई. का दिसम्बर आ गया जब कि आप को इल्हाम के द्वारा लोगों से बैअत लेने का आदेश दिया गया और प्रथम बैअत 1889 ई. में लुधियाना नामक स्थान पर जहां मियां अहमद जान नामक एक श्रद्धालू थे उन के निवास स्थान पर हुई और सब से पहले हज़रत मोलाना नूरूद्दीन रज़िअल्लाहो अन्हो ने बैअत की और उस दिन लगभग चालीस व्यक्तियों ने बैअत की। इस के पश्चात् धीरे-धीरे कुछ लोग बैअत में शामिल होते रहे ।

मसीह मौऊद होने का दावा और उस की घोषणा

परन्तु 1891 ई. में एक और महान परिवर्तन हुआ अर्थात हज़रत मिर्ज़ा साहिब को इल्हाम द्वारा बताया गया कि हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम जिन के दोबारा आने के मुसलमान और मसीही दोनों सर्मथक हैं का देहान्त हो चुका है और। ऐसे फोत हुये हैं कि फिर वापिस नहीं आ सकेंगे। और यह कि मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा प्रकट होने का अर्थ एक ऐसा व्यक्ति है जो उनके गुण लेकर आए और वह आप ही हैं। जब इस बात पर आपको पूरा विश्वास हो गया और बार-बार इल्हाम द्वारा

आप को विवश किया गया कि आप इस बात की घोषणा करें तो आप को विवश होकर इस कार्य के लिए उठना पड़ा। क़ादियान में ही आप को यह इल्हाम हुआ था आप ने अपने घर में फर्माया कि अब एक ऐसी बात मेरे ज़िम्मे कर दी है कि अब इस से घोर विरोध होगा इस के पश्चात् आप लुधियाना चले गए और मसीह मौऊद होने की घोषणा 1891 ई. में इश्तिहार द्वारा की गई।

उस समय के ऊलमा का घोर विरोध लुधियाना में वाद-विवाद

इस घोषणा का प्रकाशित होना था कि पूरे भारत में शोर पड़ गया और इतना अधिक विरोध हुआ कि वही ऊलेमा जो आप का पक्ष लेते थे आप के विरुद्ध उठ खड़े हुए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का विरोध

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी जिन्होंने अपनी पत्रिका इशातु-सुन्ना में आप के सर्मथन में ज़बरदस्त आरटिकल लिखे थे उन्होंने ही आप के विरुद्ध ज़मीन और आसमान सिर पर उठा लिये और लिखा कि मैं ने ही इस व्यक्ति को चढ़ाया था और अब मैं ही इसे गिराऊंगा अर्थात मेरे ही समर्थन से इन की इन की कुछ शान स्थित हुई थी अब मैं इतना विरोध करूंगा कि ये लोगों की नज़रों से गिर जाएंगे और बदनाम हो जाएंगे। मौलवी साहिब कुछ और मौलवियों के साथ लुधियाना भी पहुंचे।

लुधियाना में वाद-विवाद

और वाद विवाद का चैलेंज दिया जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वीकार कर लिया। परन्तु वाद-विवाद में विरोधी दल ने इस प्रकार फ़ज़ूल बहसें आरम्भ कर दीं कि कुछ फैसला ना हो सका। और जब डिप्टी कमिशनर साहिब ने देखा कि झगड़ा आरम्भ हो गया है और निकट है कि गदर की स्थिति पैदा हो जाए तो उन्होंने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी को एक विशेष आज्ञा द्वारा लुधियाना से उसी दिन चले जाने पर विवश कर दिया। इस पर कुछ मित्रों के सुझाव से कि शायद ऐसा हुक्म आपके लिए भी जारी हो आप लुधियाना से अमृतसर आए

और आठ दिन वहां रहे परन्तु बाद में डिस्ट्रक मैजिस्ट्रेट साहिब के पूछने पर बताया कि आप के बारे में कोई हुक्म नहीं था जिस कारण फिर लुधियाना चले गए और फिर वहां एक सप्ताह रहे और फिर क़ादियान वापिस आ गये।

दिल्ली की यात्रा और मौलवी नज़ीर हुसैन के साथ वाद-विवाद

इस के पश्चात् कुछ समय कादियान रह कर फिर लुधियाना चले गए जहां कुछ समय रहे वहां से दिल्ली चले गए जहां आप 28 सितम्बर 1891 ई. की सुबह को पहुंचे। क्योंकि दिल्ली उस समय में स्मस्त भारत में ज्ञान का केन्द्र समझा जाता था वहां के लोगों में पहले से ही आप के विरुद्ध जोश फैलाया जाता था आप के वहां पहुंचते ही वहां के उलेमा में एक जोश पैदा हुआ और उन्होंने आपको वाद-विवाद के लिए चैलेन्ज देने आरम्भ किए और मौलवी नज़ीर हुसैन जो समस्त भारत के उलमाए हदीस में से सबसे योग्य थे उन से वाद-विवाद निश्चित हुआ। ज़ामा मस्जिद वाद-विवद का स्थान निश्चित किया गया। परन्तु वाद-विवाद का प्रस्ताव विरोधियों ने स्वंय ही निश्चित कर लिया और आप को कोई सूचना नहीं दी। उसी समय हकीम अब्दुलमजीद साहिब देहलवी अपनी गाड़ी ले कर आ गए और कहा कि मस्जिद में वाद-विवाद है। आपने फ़र्माया कि एसे झगड़े के अवसर पर हम नहीं जा सकते जब तक पहले सरकारी प्रबन्ध न हो फिर वाद-विवाद के लिए हम से विचार-विमर्श होना चाहिए और वाद-विवाद की शर्तें निश्चित करनी थी आप के न जाने पर और शोर हुआ अन्तत: आप ने घोषणा की कि मौलवी नज़ीर हुसेन देहलवी जामा मस्जिद में सौगन्ध खा लें कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क़ुर्आन के भावअनुसार जीवित हैं और अब तक मरे नहीं और इस सौगन्ध के बाद एक वर्ष तक किसी आसमानी अज़ाब मे प्रकोप न उतरे तो मैं झूठा हूं और मैं अपनी पुस्तकों को जला दूंगा और इस के लिए तिथि भी निश्चित कर दी। मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब के विद्यार्थी इस से बहुत घबराए और बहुत रोकें डालनी आरम्भ कर दीं। लेकिन लोग हठ करने लगे कि इस में क्या हर्ज है कि मिर्ज़ा साहिब का दावा सुनकर सौगन्ध खा लें कि ये झूठा है और लोग उस समय बहुत अधिक संख्य में जामा मस्जिद में इक्टठे हो गए। हज़रत साहिब को लोगों ने बहुत रोका कि आप न जाएं बहुत झगड़ा हो जाएगा परन्तु आप

वहां गए और आपके साथ बारह मित्र थे (हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के भी बारह ही हवारी थे। इस अवसर पर आपके साथ ये संख्या भी एक निशान थी) जामा मस्जिद दिल्ली का विशाल भवन अन्दर और बाहर व्यक्तियों से भरा हुआ था बल्कि सीढ़ियों पर भी लोग खड़े थे। हज़ारों व्यक्तियों के समूह में से गुज़र पर जब कि सब लोग पागलों की तरह खून भरी नज़रों से आप की ओर देख रहे थे आप इस छोटी सी जमाअत के साथ मस्जिद के महराब में बैठ गए।

लोगों के समूह को नियंत्रित करने के लिए सुप्रीटेंडैन्ट पुलिस कुछ अन्य पुलिस अफसरों और लगभग सौ कान्सटेबलों के साथ आए हुए थे। लोगों में से अधिकतर ने अपनी झोलियों में पत्थर भरे हुए थे। और ज़रा से इशारे पर पत्थराओ करने को तैयार थे और द्वित्य मसीह भी प्रथम मसीह की भांति फ़कीहियों और फ़रीसियों अर्थात मौलवीयों का शिकार हो रहा था। लोग इस दूसरे मसीह को सूली पर लटकाने की अपेक्षा पत्थरों से मारने पर तुले हुए थे और वाद-विवाद में तो उन्हें पराजय मिली मसीह के देहान्त पर बहस करना लोगों ने स्वीकार ना किया। सौगन्ध भी न किसी ने खाई और न मौलवी नज़ीर हुसैन को खाने दी। ख्वाजा महुम्मद यूसुफ साहिब पलीडर (वकील) अलीगढ़ ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आप के सिद्धन्त लिखाए और सुनाने चाहे परन्तु क्योंकि मौलवियों ने लोगों को ये सुना रखा था कि यह व्यक्ति ना क़ुर्आन को माने ना हदीस को ना रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को। उन्हें इस धोखे के खुल जाने का भय हुआ इस लिए लोगों को भड़का दिया। फिर क्या था एक शोर पैदा हो गया और मुहम्मद यूसफ को वह कागज़ सुनाने से लोगों ने रोके रखा।

अफसर पुलिस ने जब देखा कि हालत खतरनाक है तो पुलिस के समूह को तित्तर बित्तर करने का आदेश दिया और घोषणा की कि कोई वाद-विवाद नहीं होगा। लोग तित्तर बित्तर हो गए पुलिस आप को घेरे में ले कर बाहर आ गई दरवाज़े पर गाड़ियों की प्रतीक्षा में कुछ देर ठहरना पड़ा। लोग वहां इक्टठे हो गए और जोश में आ कर हमला करने का निश्चय किया। इस पर पुलिस अफसरों ने गाड़ी में सवार करा कर आप को भेज दिया और स्वंय भीड़ को तित्तर बित्तर करने में लग गए।

इस के पश्चात् मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब को दिल्ली के लोगों ने भोपाल से बुलवाया और उन से वाद-विवाद हुआ जिस का पूरा हाल छपा हुआ है।

डिप्टी अब्दुल्ला आथम से वाद विवाद के हालात

कुछ दिन पश्चात् आप वापस क़ादियान लौट आए। कुछ महीनों के पश्चात् 1892 ई. में फिर एक यात्रा की। पहले लाहौर गए वहां मौलवी अब्दुल हकीम कलानोरी से वाद-विवाद हुआ वहां से स्यालकोट और वहां से जालन्धर और फिर वहां से लुधियाना पधारे। लुधियाना से फिर क़ादियान लौट आए।

मसीहियों से वाद-विवाद "जन्गे मुकद्दस"

इस के पश्चात् 1893 ई. हज़ूर का मसीहियों के साथ वाद-विवाद हुआ। मसीहियों की ओर से डिप्टी अब्दुल्लाह आथम निश्चित हुए। यह वाद-विवाद मुबाहिसा अमृत्सर में हुआ और पन्द्रह दिन तक रहा और जन्गे मुकद्दस के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

इस वाद विवाद में भी जैसा कि हमेशा आप के विरोधियों को हानि होती रही हैं मसीही मुनाज़रीन को बहुत हानि हुई और इस का बहुत महत्वपूर्ण असर पड़ा। इस वाद विवाद के पढ़ने से (यह वाद विवाद लिखित रूप में हुआ था और दोनों पक्ष आमने सामने बैठ कर एक दूसरे के पर्चे का उत्तर देते थे और वह असल एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित की गई है) पता चलता है कि मसीही वाद-विवाद करने वाला आप की जबर दस्त दलीलों से तंग आ जाते थे। और बार-बार दावा बदलता जाता था और कई जगह तो मसीहियों की ओर से अनुचित दुर्वचन तक बोले गए आप ने इस आधुनिक इलम-ए-कलाम को प्रस्तुत किया कि हर एक दल अपने धर्म की सत्यता के दावे और दलीलें अपनी प्रमाणित पुस्तकों द्वारा प्रस्तुत करें।

एक विचित्र घटना

इस वाद-विवाद में एक विचित्र घटना घटी जिस में मित्र शत्रु आप को खुदा की तरफ से मिलने वाली योग्यता और खुदाई समर्थन को मान गये और वह इश्वरीय समर्थन के और वह यह कि चाहे बहस दूसरी बातों पर ही हो रही थी मगर मसीहियों ने आपको लज्जित करने के लिए एक दिन कुछ लूले, लंगड़े और अन्धे इक्टठे किए और वाद-विवाद के मध्य में आप के समक्ष लाकर कहा कि आप मसीह होने का

दावा करते हैं वह तो लूले, लंगड़ों और अन्धों को अच्छा किया करते थे इसलिए आप का दावा तब ही सच्चा हो सकता है यदि आप भी ऐसे रोगियों को ठीक करके दिखादें और दूर जाने की आवश्यकता नहीं रोगी उपस्थित हैं। जब उन्होंने यह बात प्रस्तुत की तो सब लोग आश्चर्य चकित रह गए और हर एक व्यक्ति आश्चर्य चकित होकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि देखे कि मिर्ज़ा साहिब इस का क्या उत्तर देते हैं? और मसीही अपने इस विचित्र कार्य पर बहुत प्रसन्न हुए कि आज इसके सामने न ठुकराई जाने वाली दलील रखी गई है और भरी सभा में कैसी ज़िल्लत उठानी पड़ी है। परन्तु जब आप ने इस मांग का उत्तर दिया तो उन की सारी प्रसन्नता शोक और लज्जा में परिवर्तित हो और विजय पराजय में बदल गई और सब आप की हाज़िर जवाबी और मुनासिब (उचित) उत्तर से लाजवाब हो गए। आप ने फर्माया कि इस प्रकार के रोगियों को अच्छा करना तो इन्ज़ील में लिखा है हम तो इस के समर्थक ही नहीं हैं बल्कि हमारे निकट तो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के चमत्कार का रंग ही और था। ये तो इन्जील का दावा है कि वह ऐसे रोगियों को शरीरिक रूप में अच्छा करते थे और इस प्रकार हाथ फेर कर ना कि प्रार्थना और दवा से। किन्तु इन्जील में लिखा है कि अगर तुम में ज़रा सा भी इमान हो तो तुम लोग इस से बढ़ कर विचित्र काम कर सकते हो। इन रोगियों को हमारे सामने प्रस्तुत करना आप लोगों का काम नहीं बल्कि हमारा काम है और अब हम इन रोगियों को जो आप लोगों ने बड़ी कृपा से इक्टठे किए हैं आप के समक्ष रख कर कहते हैं कि कृप्या इन्ज़ील के आदेशानुसार अगर आप लेगों में एक राई के दाने के बराबर भी ईमान है तो इन रोगियों पर हाथ रख कर कहें कि अच्छे जाओ अगर यह अच्छे हो गए तो हम विश्वास कर लेंगे कि आप लोग और आप का धर्म सच्चा है वरना जो दावा आप लोगों ने स्वंय किया है उसे भी पूरा न कर सके तो फिर आप की सच्चाई पर किस प्रकार विश्वास किया जा सकता है। इस उत्तर का ऐसा प्रभाव हुआ कि मसीही विल्कुल चुप हो गए और कुछ उत्तर ना दे सके और बात टाल दी।

इस के पश्चात् इन्हीं दिनों आप एक बार फिरोज़पुर गए इन सभी यात्राओं में आप को तंग किया गया और लोगों ने आप को बहुत दु:ख दिया और जो कुछ लेखनों द्वारा प्रकाशित किया गया इस की कोई हद नहीं जहां आप जाते वहीं लोग मिल कर आप को दुख देते।

शुक्रवार के अवकाश के लिए कोशिश

एक जनवरी 1896 ई. को आप ने इस्लामी प्रतीष्ठा को व्यक्त करने और नमाज़े जुमा के आम रिवाज के लिए एक प्रयास आरम्भ किया अर्थात भारत सरकार से शुक्रवार के अवकाश के लिये प्रस्ताव पेश किया। दुर्भाग्य-वश मुस्लमानों में शुक्रवार के बारे में जो उन के लिए मसीह मौऊद का एक जबरदस्त निशान था एसी गल्त फहमियां पैदा हो गई थी कि कुछ शर्तों को दृष्टिगत रख कर शुक्रवार की फ़रजियत पर ही बहस छिड़ चुकी थी और कार्यकारी रूप में जुम्मा बहुत स्थानों पर अप्रयचित हो गया था। आपने उसको जीवित किया और चाहा कि सरकार शुक्रवार की छुट्टी स्वीकार कर ले। इस बारे में जो मेमोरियल सरकार की सेवा में भेजना आप ने चुना उस की तैयारी से पूर्व ही मौलवियों ने अपनी आदत के अनुसार विरोध किया और इस कार्य को अपने हाथ में लेना चाहा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ये कार्य केवल अल्लाह की खातिर कर रहे थे आप को किसी प्रकार की प्रशंसा की इच्छा नहीं थी आप का लक्ष्य तो इस विशेष धार्मिक सेवा का अंजाम पाना था चाहे किसी के हाथ से हो। आप ने सम्पूर्ण कार्य मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी क़ी प्रार्थना पर उन के अधीन कर देने घोषणा कर दी कि वह शुक्रवार की छुट्टी के लिए स्वंय प्रयास करने का दावा करते हैं व्रो करें। मगर अफसोस उन्होंने इस लाभदायक कर्य को इस मार्ग से रोक दिया मगर आप का यह प्रस्ताव इलाही प्रस्ताव था अन्त खुदा ताअला ने आप ही की जमाअत के द्वारा उस को पूर्ण किया।

संसार के धर्मों का महान जलसा

1896 ई. के अन्त में कुछ लोगों ने मिल कर लाहौर में एक धार्मिक कानफ्रेन्स आयोजित करने का निश्चय किया और इस के लिए सभी धर्मों के समर्थकों को सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया जिन्होंने बड़ी प्रसन्नता से इस बात को स्वीकार किया। विवाद में शर्त थी कि किसी धर्म पर आक्रमण ना किया जाए और निम्नलिखित पांच शिर्षकों पर विभिन्न धर्मों के अनुयाइयों से लेख लिखने की प्रार्थना की गई:-

1. मनुष्य की शारीरिक, चारित्रक और अध्यात्मिक स्थितियां।

2. मनुष्य में जीवन के बाद की हालत।

3. संसार में मनुष्य के अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य क्या है और वह किस प्रकार पूरा हो सकती है।

4. कर्म का प्रभाव संसार व आगली दुनिया में क्या होता है।

5. ज्ञान और मारफत के साधन क्या क्या है।

इस कान्फ्रेंस का निर्णायक हज़रत अलैहिस्सलाम की सेवा में भी क़ादियान उपस्थित हुआ और आप ने हर प्रकार से उन के समर्थन का वचन दिया बल्कि सही अर्थों में इस कान्फ्रेंस की नींव स्वंय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही रखी थी जो व्यक्ति बाद में कान्फ्रेंस का निर्णायक बना क़ादियान आया तो हज़रत अलैहिस्सलाम ने यह योजना प्रस्तुत की थी। क्योंकि आप का लक्ष्य संसार को इस सच्चाई से परिचित कराना था जो आप ले कर आए थे और आपके किसी भी कार्य में दिखावा नहीं होता था इस लिए आप ने उस व्यक्ति को इस कर्य में प्रयास करने पर तैयार किया और इस का पहला इश्तिहार (विज्ञापन) क़ादियान में ही छाप कर प्रकाशित कराया आपने एक मुरीद को नियुक्त किया कि वह हर प्रकार से उन की सहायता करे और स्वंय भी लेख लिखने का वचन दिया। जब आप लेख लिखने लगे तो आप बहुत बीमार हो गए और दस्तों की बीमारी शुरू हो गई परन्तु इस बीमारी में भी आप ने एक लेख लिखा और जब आप वह लेख लिख रहे थे तो आपको इल्हाम हुई कि "मज़मून बाला रहा" (लेख सर्वश्रेष्ठ रहा) अर्थात आप का लेख इस कान्फ्रेंस में दूसरों के लेखों से सर्वश्रेष्ठ और उत्तम रहेगा। इस प्रकार आप ने समय से पूर्व ही एक विज्ञापन द्वारा ये बात प्रकाशित करदी कि मेरा लेख सर्वश्रेष्ठ रहेगा।

समारोह 26-27-28 दिस्म्बर 1896 ई. को निश्चित थे। सम्मेलन के प्रबन्ध के लिए माडरेटर साहिबान थे जिन के नाम निम्नलिखित हैं:-

1. राय बहादुर प्रतूल चन्द्र साहिब जज साहिब कोर्ट पंजाब।

2. खान बहादुर शेख खुदा बख्श साहिब जज स्माल कॉज़ कोर्ट लाहौर।

3. राय बहादुर पण्डित राधा कृष्णकोल पलीडर चीफ कोर्ट भूतपूर्व गवर्नर जनरल जम्मू

5. राय बहादुर भवानी दास एम-ए स्टेलमेन्ट् आफिसर जेहलुम।

6. हज़रत मौलवी हकीम नुरुद्दीन साहिब राज वैद्य

7. सरदार ज्वाहर सिंह साहिब सेकेट्री खालसा कॉलेज कमेटी लाहौर।

इस कानफ्रैन्स के लिए विभिन्न धर्मों के प्रसिद्ध ज्ञानियों ने लेख तैयार किए थे इस लिए लोगों में इस के सम्बन्ध में बड़ी रूची थी और बहुत चाव से भाग लेते थे और यह सम्मेलन एक धार्मिक दन्गल का रूप धारण कर गया ता और प्रत्येक धर्म के मानने वाले अपने अपने प्रतिनिधियों की विजय देखने के इच्छुक थे। इस स्थिति में सभी पुराने धर्म जिन के मानने वाले अधिक संख्या में जन्म ले चुके हैं बिल्कुल सुरक्षित थे क्योंकि उन की दाद देने वाले लोग सम्मेलन में बहुत अधिक पाए जाते थे किन्तु मिर्ज़ा साहिब का लेख एक ऐसे सम्मेलन में सुनाया जाना था जिस में मित्र नाममात्र थे और सब मुखालिफ ही मुखालिफ थे क्योंकि उस समय तक आप की जमाअत दो तीन सौ से अधिक नहीं थी उस सम्मेलन में तो शायद पचास से अधिक आदमी भी सम्मिलित न होंगे।

आप का भाषण 27 दिसम्बर को डेढ़ बजे से साढ़े तीन बजे तक था आप स्वंय तो वहां न जा सके थे परन्तु आप ने अपने एक शिष्य मौलवी अब्दुल करीम साहिब को अपनी ओर से लेख पढ़ने के लिए नियुक्त किया था। जब उन्होंने भाषण आरम्भ किया तो थोड़ी ही देर में ऐसा दृश्य हो गया कि मानों लोग बुत बने बैठे हों और समय के समाप्त होने तक लोगों को पता ही ना चला कि आप कितने समय तक बोलते रहे हैं। समय समाप्त होने तक लोगों को काफी चिन्ता हुई क्योकि आप के लेख का अभी पहला प्रश्न ही समाप्त ना हुआ था औरउस समय लोगों की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही जब्कि मौलवी मुबारक अली साहिब स्यालकोटी ने जिन का भाषण आप के बाद था घोषणा की कि आप के लेख का समय भी हज़रत साहिब को ही दिया जाए इस प्रकार मौलवी अब्दुल करीम साहिब आप का भाषण पढ़ते चले गए यहां तक कि साढ़े चार बज गए जब कि सम्मेलन का समय समाप्त होना था परन्तु अब भी पहला प्रश्न समाप्त न हुआ था और लोग आग्रही थे कि इस लेक्चर् को समाप्त न किया जाए। इस प्रकार सम्मेलन के प्रबन्धकों ने घोषणा की कि समय का ध्यान न रखते हुए ये लेख जारी रहे। जिस पर साढ़े पांच बजे तक सुनाया गया तब जाकर पहला प्रश्न समाप्त हुआ। लेख के समाप्त होते ही लोगों ने हठ किया कि इस लेख के समाप्त करने के लिए सम्मेलन का एक दिन और बढ़ाया जाए इस प्रकार 28 तारीख के प्रोग्राम के अतिरिक्त 29 तारीख को भी सम्मेलन का प्रबन्ध

किया गया। और इस दिन क्योंकि कुछ और धर्मों के प्रतिनिधियों ने भी समय की प्रार्थना की थी इस लिए सम्मेलन की कार्यवाही साढ़े दस बजे के स्थान पर साढ़े नौ बजे से आरम्भ होने की घोषणा की गई और सब से पहले आप ही का लेख रखा गया और पहले दिनों में लोग साढ़े दस बजे भी पूरे नहीं आते थे परन्तु आप के पहले दिन के लैक्चर का ये प्रभाव था कि अभी 9 भी नहीं बजे थे कि प्रत्येक धर्म के लोगों के समूह सम्मेलन में एकत्रित होने आरम्भ हो गए और ठीक समय पर सम्मेलन आरम्भ किया गया उस दिन भी चाहे आप के लेख के लिए ढ़ाई घण्टे दिय गए थे परन्तु भाषण का उस समय में समाप्त न हो सकने के कारण प्रबन्धकों को समय और देना पड़ा क्योंकि सभी उपस्थित लोग एक साथ मिल कर इस भाषण को आरम्भ रखने पर आग्रही थे। इस प्रकार माडरेटर महोदय को समय बढ़ाना पड़ा। दो दिनों के लगभग साढ़े सात घण्टों में जाकर ये भाषण समाप्त हुआ और पूरे लाहौर में एक शोर पड़ गया और सभ लोगों ने स्वीकार किया कि मिर्ज़ा साहिब का लेख सर्वोत्तम रहा और प्रत्येक धर्म के समर्थक इस की अच्छाई के समर्थक हुए। सम्मेलन रिपोर्ट बनाने वालों का अनुमान है कि आप के लेकचरों के समय दर्शकों की संख्या बढ़ते-बढ़ते सात आठ हज़ार तक पहुंच जाती थी। ये लेकचर एक महान विजय थी जो आप को प्राप्त हुई और उस दिन आप का सिक्का आपके विरोधियों के दिलों पर और भी बैठ गया और स्वंय विरोधी समाचार पत्रों ने इस बात को स्वीकार किया कि आप का लेख इस कॉनफ्रेंस में सर्वोत्तम रहा। ये लेख वही है जिस का अंग्रेज़ी रुपान्तर ''टीचिंगज़ ऑफ इस्लाम'' यूरोप और अफ्रीका में विशेष रूप से प्रसिद्धी प्राप्त कर चुका है।

1897 ई. के आरम्भ के साथ इसाई संसार पर अतमामे हुज्जत के लिए एक और ढंग प्रस्तुत किया और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के वास्तविक व्यक्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ईसाइयों के गल्त सिद्धान्तों के सुधार के लिए चालिस दिनों के मुकाबले का एलान किया चाहे इस प्रतियोगिता में दूसरे धर्मों के समर्थक भी सम्मिलित थे मगर ईसाई विशेष रूप से सम्बोधित थे। इस के साथ एक हज़ार रु. का पुरस्कार भी उस व्यक्ति के लिए निश्चित था जो यसूह की पेशगोइयों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों और निशानों से शक्तिशाली दिखा सके मगर किसी को हिम्मत नहीं हुई।

लेखराम के कत्ल की घटना

1897 ई. में लेखराम नामक एक आर्य 6 मार्च को आप की भविष्यवाणी के अनुसार मारा गया और उस पर आर्यों में बहुत शोर मचा और कुछ उद्दन्डियों ने भिन्न भिन्न प्रकार से अहमदियों और फिर उन के साथ दूसरे मुसलमानों को भी कष्ट देना आरम्भ किया और हज़रत मसीह मौऊद के विरुद्ध तो बहुत अधिक शोर हुआ और स्पष्ट शब्दों में आप पर कत्ल का आरोप लगाया गया और तत्काल ही आप की तलाशी ली गई कि शायद कोई चिन्ह कत्ल का मिल जाए परन्तु ईश्वर ने मुखालिफों को हर प्रकार से असफल रखा और बावजूद इस के कि हर प्रकार से आप पर आरोप लगाने का प्रयास किया गया किन्तु फिर भी सफलता न मिली और आप इस आरोप से बिल्कुल पवित्र प्रमाणित हुए।

हुसैन कामी रूमी दूत का क़ादियान में आना

मई 1897 ई. में महान् घटना का आरम्भ हुआ जो इतिहास में एक निशान के रूप में रहेगा। हुसैन कामी रोम का दूत अपनी अनेकों प्रार्थनाओं के पश्चात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में क़ादियान उपस्थित हुआ हज़रत ने अपनी ईश्वरीय प्रतिभा और ईश्वरीय सूचना पर उसकी अपनी हालत और तुर्की पर आने वाले संकाटों से सूचित किया क्योंकि चर्चित राजदूत ने रोम के राज्य से सम्बन्धित एक विशेष प्रार्थना की थी जिस पर आप ने उस को साफ कह दिया कि सुल्तान (रोम के राजा) के राज्य की स्थिति अच्छी नहीं है और मैं क़श्फी तौर पर इस के सदस्यों की स्थिती अच्छी नहीं देखता और मेरे निकट इन स्थितियों के साथ अन्जाम अच्छा नहीं

इन बातों से उपस्थित दूत रुष्ठ हो कर चला गया और लाहौर के एक समाचार पत्र में गन्दी गालियों का एक पत्र छपवाया जिस से भारत और पंजाब के मुसलमानों में शोर मच गया मगर बाद में घटने वाली घटनाओं ने इस वास्तविकता को खोल दिया इस के अन्तर्गत बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हो गई। स्वंय उपस्थित दूत हज़रत के प्रसिद्ध इल्हाम इन्नी मुईनुन मन अरादा इहानाका का निशान बना क्योंकि वह एक संगीन आरोप में पकड़ा जा कर दण्डित किया गया और जिस समाचार पत्र

ने बड़े ज़ोर से इस लेख का समर्थन किया था और उसे छापा था वह भी दण्ड से ना बचा और तुर्की के राज्य की जो हालत है वह हर व्यक्ति जानता है।

मुकद्दमा डॉक्टर मार्टन कलार्क

इसी सन की पहली अगस्त को आप के विरुद्ध डा. मार्टन कलार्क नामक एक मसीही पादरी ने मुकद्दमा साज़िश कत्ल मिस्टर ए. ई. मारटीनों डिस्ट्रिकट मेजिस्ट्रेट अमृतसर की अदालत में दायर किया और कहा कि मिर्ज़ा साहिब ने अब्दुल हमीद नामक एक व्यक्ति को मेरे कत्ल करने के लिए भेजा था। पहले तो डिप्टी कमीश्नर साहिब बहादुर ने आप के नाम गिरफ्तारी वारेन्ट निकाला किन्तु बाद में उनको पता चला कि किसी और ज़िले के होने के कारण ये बात उन के अधिकार से बाहर है इसलिए मुकद्दमा डिस्ट्रिक मेजिस्ट्रेट साहिब बहादुर ज़िला गुरदासपुर की अदालत में स्थानांत्रित किया जिन का नाम एम. डब्लयू. डगलस है और जो इस समय अण्डेमान द्वीपसमूह की चीफ कमिश्नरी से पैन्शन ले कर विलायत में हैं।* आप के सामने भी अब्दुल हमीद ने यही कहा कि मुझे मिर्ज़ा साहिब ने मार्टन कलार्क साहिब के कत्ल के लिए भेजा था और कहा था कि एक बड़े पत्थर से इन को मार दो। परन्तु क्योंकि इस गवाही में जो उस ने डिस्ट्रिकट मैजिस्ट्रट अमृत्सर के सामने दी थी और उस में जो आप के सामने दिया कुछ अन्तर था इस लिए आप को कुछ शक पड़ गया और आप ने बड़े ज़ोर से इस काम की छान बीन आरम्भ की और चार ही पेशियों में 27 दिन के अन्दर मुकद्दमे का निर्णय कर दिया और बावजूद इस के कि आप के मुकाबले पर एक मसीही जमाअत थी धार्मिक पक्षपात किए बिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में निर्णय दिया और आप को साफ बरी कर दिया बल्कि आज्ञा दी के अपने विरोधियों के विरुद्ध मुकद्दमा दायर करें परन्तु आप ने उन को क्षमा कर दिया और उन पर कोई मुकद्दमा ना किया। डिस्ट्रकट मैजिस्ट्रेट साहिब अपना निर्णय देते हुए लिखते हैं- "हम ने उस का बयान सुनते ही उस को अकल से दूर समझा क्योंकि प्रथम तो उस का ब्यान जो हमारे सामने हुआ तो उस ब्यान से भिन्न था जो अमृत्सर के डिस्ट्रकट मजिस्ट्रेट साहिब के सामने हुआ। इस के अतिरिक्त उस की चाल ढ़ाल ही सन्देह जनक थी। दूसरे हम ने उस की गवाहियों में विचित्र बात देखी

✻ अब कैप्टन डगलस साहिब का देहान्त हो चुका है।

कि जितनी देर वह बटाला में मिशन के कर्मचारियों के पास रहा उस का ब्यान लम्बा होता गया इस प्रकार उस ने एक ब्यान 12 अगस्त को दिया और एक 13 अगस्त को और दूसरे दिन के ब्यान में विस्तार बढ़ गया था जो पहले दिन के ब्यान में नहीं था। इसलिए इस से हमें सन्देह हुआ कि या तो इसे कोई सिखाता है या इसे बहुत कुछ पता है जिसे वह प्रकट नहीं करना चाहता। इस लिए हम ने साहिब सुपीटेन्डेन्ट पुलिस को कहा जो एक योरपियन आफिसर थे कि इस को मिशन कमपाउण्ड से निकल कर अपनी हिरासत में रखो और फिर ब्यान लो। उन्होंने उसे मिशन के कब्ज़े से निकाल लिया और जब आप ने उससे ब्यान लिया तो बिना किसी वादामाफी के वो रो कर पांव पर गिर गया और कहा कि मुझ को डरा कर ये सब कुछ कहलवाया गया हूं। और आत्महत्या के लिए तैयार था और वास्तव में जो कुछ मैंने मिर्ज़ा साहिब के विरुद्ध कहा है वो अब्दुल रहीम वारिसुद्दीन और प्रेम दास ईसाइयों की साज़िश और उन के सिखाने से किया है। न मुझे मिर्ज़ा साहिब ने भेजा था और न मेरा उनसे कोई सम्बन्ध था इस प्रकार जो कठिनाई एक दिन के ब्यान में आती दूसरे दिन ये मुझे सिखा देते और मिर्ज़ा साहिब के जिस शिष्स के बारे में मैंने कहा है कि उस ने कत्ल के पश्चात् मुझे श्रण देनी थी। उसके चहरे से भी मैं परिचित नहीं । ना उस का नाम सुना था। उन्होंने स्वंय ही उस का नाम और पता मुझे याद करा दिया और इस भय से कि मैं भूल ना जाऊं मेरी हथेली पर पैंसिल से नाम लिख दिया था कि उस समय देख लेना और ये भी कहा कि जब पहले मुझ से मिर्ज़ा साहिब के विरुद्ध ब्यान लिखवाया तो इन ईसाइयों ने प्रसन्न होकर कहा कि अब हमारा उद्देश्य पूरा हुआ। (अर्थात् अब हम मिर्ज़ा साहब को फसाएगें)।

यह सब कुछ विस्तारपूर्वक लिख कर मैजिस्ट्रट साहब बहादुर ने आप को बरी किया। इस मुकद्दमा पर आप के विरोधी इतने प्रसन्न थे कि एक आर्य वकील ने बिना पैसे लिए इस में मसीहियों की ओर से पैरवी की और मुसलमान मौलवी भी आप के विरुद्ध गवाही देने आए। इस प्रकार मसीही, हिन्दु और मुसलमानों ने मिल कर आप पर हमला किया और कुछ अनुचित ढंग भी प्रयोग किये गए परन्तु ईश्वर ने कप्तान डगलस को पलातूस से हि अधिक हिम्मत और धैर्य दिया। उन्होंने हर अवसर पर यही कहा कि मैं बेईमानी नहीं कर सकता। और ये नहीं किया कि अपने हाथ धो कर मसीह मौऊद को उस के शत्रुओं के हाथ में दे देते बल्कि उन्होंने आप को बरी किया

और इस प्रकार रोमन राज्य पर ब्रिटिश राज्य की सर्वोच्चता साबित कर दी।

उन्हीं दिनों में आपने अस सुल्हो ख़ैर* के नाम से एक विज्ञापन प्रकाशित करके मुसलमान उलमा के समक्ष सुझाव प्रस्तुत किया कि वह आप का विरोध करना छोड़ दें और आप को विरोधियों का सामना करने दें और इस के लिए दस वर्ष का समय निश्चित किया कि इस निश्चित समय के अन्दर अगर मैं झूठा हूं तो स्वंय तबाह हो जाऊंगा और अगर सच्चा हूं तो तुम प्रकोप से बच जाओगे जो सच्चों के विरोध के कारण खुदा ताअला की ओर से प्रकट होता है। परन्तु मुसलमानों ने इस को स्वीकार न किया और इस्लाम के विरोधियों से मुकाबला करने के बजाए अपने सी ही मुकाबला करना स्वीकार किया।

एक यात्रा

अक्तूबर 1897 ई. में आप को एक गवाही पर मुल्तान जाना पड़ा। वहां गवाही दे कर जब वापस लोटे तो कुछ दिनों लाहौर भी ठहरे। यहां जिन जिन गलियों से आप गुजरते उन में लोग आप को गालियां देते और पुकार-पुकार कर बुरे शब्द आप की शान में से कहते। मैं उस समय आठ वर्ष का था और मैं भी इस यात्रा में आपके साथ था। मैं इस विरोध का जो लोग आप से करते ते कारण तो नहीं समझ सकता था इस लिए ये देख कर मुझे आश्चर्य होता कि जहां से आप गुज़रते हैं लोग आप के पीछे क्यूं तालियां पीटते हैं सीटियां बजाते हैं। मुझे याद है कि एक टुन्डा व्यक्ति जिस की एक कलाई कटी हुई थी और बाकी हाथ पर कपड़ा बान्धा हुआ था ये नहीं पता कि हाथ कटने का ही जख्म बाकी ता या कोई नया घाव था वह भी लोगों में उपस्थित हो कर शायद मस्जिद वज़ीर खान की सीढियों पर खड़ा तालियां पीटता और अपना कटा हुआ हाथ दूसरे हाथ पर मारता था और दूसरों के साथ मिल कर शोर मचा रहा था कि ''हाय! हाय मिर्ज़ा नठ गया'' अर्थात (मैदान से भाग गया) और मैं इस दृष्य को देख कर बहुत हैरान था विशेष रूप से उस व्यक्ति पर और देर तक गाड़ी से सर निकाल कर उस व्यक्ति को देखता रहा। लाहौर से हज़रत साहिब सीधे क़ादियान पधारे।

---

* ऐकता में भलाई है।

पंजाब में प्लेग (ताऊन) और हज़ूर अलैहिस्सलाम की पूर्व सावधानियां

उसी वर्ष पंजाब में प्लेग फूटा और जब कि सभी धार्मिक व्यक्ति उन प्रयत्नों के कठोर विरोधी थे जो सरकार ने प्लेग के रोकने के लिये लागू की थीं आप ने बड़े ज़ोर से उन का समर्थन किया और अपनी जमाअत को सूचित किया कि इन प्रयत्नों को अपनाने में कोई हरज नहीं बल्कि इस्लाम का आदेश है कि हर प्रकार के प्रयत्न जो सुरक्षा से समाबन्धित हो उन को अपनाया जाए और इस प्रकार आप ने लोगों में शान्ति की स्थापना में बहुत बड़ा काम किया। क्योकि उस समय लोगों में आम तौर पर ये बात फैलाई जाती थी कि सरकार स्वंय ही प्लेग फैलाती है और जो प्रयत्न उस की रोक थाम के लिए किये जाते हैं वह असल में इस बीमारी को फैलाने वाले हैं और इस्लाम के भी विरुद्ध है। इस प्रकार उलमा ने बड़े ज़ोर के साथ फतवा दे दिया था कि प्लेग (ताऊन) के दिनों में घरों से निकलना घोर पाप है और इस प्रकार हज़ारों अनपढ़ों की मौत का कारण बने चूहे मारने की गोलियां बांटी गई तो उन्हीं को प्लेग का कारण बताया गया। पिंजरे दिए गए तो उन का भी विरोध किया गया। इस प्रकार शोर मचा हुआ था और कुछ स्थानों पर सरकारी अधिकारियों पर आक्रमण भी हुए। ऐसे समय में आपकी घोषणा आप के कार्य को देख कर दूसरे लोगों को भी हिदायत हुई और आप ने मुसलमानों को सूचित किया कि प्लेग के दिनों में घरों से बाहर निकलना और बसती से बाहर निकलना इस्लामी कानून से मना नहीं बल्कि मना केवल ये बात है कि एक शहर से भाग कर दूसरे शहर में जाए क्योंकि इस से बीमारी के दूसरों शहरों में फैलने का भय होता है।

कानून-ए-सडेशन पर गर्वन्मेंट को मेमोरियल और सुझाव

ये दिन धार्मिक वाद-विवाद के कारण बहुत खतरनाक हो रहे थे और 1897 ई. और 1898 ई. विशेष रूप से प्रमुख थे। आपसी विरोध बढ़ रहा था और फसाद करने वाले इस धार्मिक शत्रुता का लाभ उठा कर सरकार के विरुद्ध लोगों को उकसाने में लगे हुए थे और इसी शरारत को अनुभव करके सरकार ने 1897 ई. में सडेशन का

कानून भी पास किया था परन्तु इस कानून के बवजूद भारत शान्ति से अशान्ति की ओर जा रहा था और इस कानून का कोई अच्छा परिणाम न निकला था। क्योंकि भारत एक धार्मिक देश है और यहां के लोग जितने धर्म के सम्बन्ध में जोश में आ सकते हैं उतने राजनैतिक कार्यों में नहीं आते परन्तु इस कानून में धार्मिक लड़ाई झगड़ों का निषेध नहीं किया गया था और ना इस की आवश्यक्ता सरकार उस समय अनुभव करती थी मगर जिस बात को सरकारी कूटनीतिज्ञ इस समझ न सके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक एकान्त स्थान में बैठे उसे देख रहे थे। इस प्रकार सितम्बर 1897 ई. में एक मेमोरियल तैयार करके लार्ड ऐल्ज़न बहादुर वाएस राय हिन्द की सेवा में भेजा और उसे छाप कर प्रकाशित भी कर दिया उस में आप ने हिज़ एक्सीलैंसी को बताया कि दगें फसादों का असली कारण धार्मिक झगड़े हैं इन के परिणामस्वरूप जो शोर लोगों के दिलों में उत्पन्न होता है उसे कुछ शरारती लोग सरकार के विरुद्ध प्रयोग करते हैं। अत: कानून सडेशन में धार्मिक अपवाद को भी प्रविष्ठ करना चाहिए और इसके लिए अपने तीन सुझाव प्रस्तुत किए हैं।

1. प्रथम ये कि कानून पास कर देना चाहिए कि हर एक धर्म के अनुयायी अपने धर्म की अच्छाईयां तो बेशक प्रस्तुत करें परन्तु दूसरे धर्म पर हमला करने की उनको अनुमति न होगी। इस कानून से न तो धार्मिक स्वतंत्रता में अंतर आएगा और न किसी विशेष धर्म का समर्थन होगा। और कोई कारण नहीं कि किसी धर्म के अनुयायी इस बात पर न ख़ुश हों कि उनको दूसरे धर्म पर हमला करने की इजाज़त नहीं दी जाएगी।

2. यदि ये विधि स्वीकार न हो तो कम से कम ये किया जाए कि किसी धर्म पर एसे आक्रमण करने से लोगों को रोक दिया जाए जो स्वंय उनके धर्म पर पड़ते हैं। अर्थात् अपने विरोधियों के विरुद्ध वह एसी बातें प्रस्तुत न करें जो स्वंय उन के ही में धर्म हों।

3. अगर ये भी पसन्द न हो तो सरकार हर एक फ़िरके से पूछ कर उसकी प्रमाणित धार्मिक पुस्तकों की एक सूचि तैयार करें। और ये कानून पास कर दिया जाए कि इस धर्म पर उन पुस्तकों से बाहर कोई आलोचना न की जाए क्योंकि जब आलोचना की नींव केवल विचारों या कथनों पर हो जिन्हें इस धर्म के अनुयायी स्वीकार ही नहीं करते तो फिर उनके अनुसार विरोध करने का परिणाम आपसी शत्रुता

में वृद्धि करने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है।

अगर इस सुझाव पर सरकार उस समय अमल करती तो जो लड़ाई झगड़े हिन्दुस्तान में पहले दिनों प्रकट हुए वे कभी न होते। लेकिन सरकार ने इस अवसर पर इस ज़रूरत को अनुभव न किया। और इसके सल्तनत के प्रबन्धकों की आंख का कीटाणुओं की बढ़ने वाली शक्ति को न देख सको जिन्हें उस समय के सुधारक ने उनकी आरम्भिक स्थिति में देख लिया था। मगर 1908 में पूरे दस साल बात सरकार को यह मजबूरन कानून पास करना पड़ा कि एक धर्म के लोगों का दूसरे धर्म पर हमला करना और अनूचित सख्ती करनी उचित नहीं और अगर कोई ऐसा करे तो इस पम्फलेट या निबन्ध के छापने वाले प्रैस या अखबार की ज़मानत ली जाए या उसे रोका जाए। लेकिन यह कानून इतनी देर के बाद पास हुआ कि इसका वह प्रभाव अब नहीं हो सकता जो उस समय हो सकता था। वास्तव में हिन्दुस्तान में सारे फ़साद की जड़ धार्मिक झगड़ा है जो कुछ विरोधियों के विचित्र षडयंत्रों के साथ सरकार के विरुद्ध प्रयोग किया जाता है। और जब किसी धर्म के अनुयाइयों की सबसे प्यारी चीज़ (उनके धर्म) पर बुरे शब्द प्रयोग किए जाएं तो अनपढ़ लोगों को सरकार के विरुद्ध करने के लिए इतना कह देना काफी होगा कि सारा दोष सरकार का है जिसके अधीन हमें इतना दुख दिया जाता है और वह लोग उस ज़ालिम का पीछा छोड़ कर उस समय की सरकार के विरुद्ध हो जाते हैं।

हृिदय को पीड़ा देने वाली एक किताब

1898 ई. में एक ईसाई मुरतद (अपने धर्म को छोड़ देने वाला) ने हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों के विरुद्ध एक हृिदय को पीड़ा देने वाली पुस्तक* प्रकाशित की जिससे मुसलमानों में एक जोश उत्पन्न हो गया। हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम ने देखा कि यह देश की शान्ति पर प्रघात डालेगा। लाहौर की एक अन्जुमन[1] ने सरकार के सम्मुख इस पुस्तक के ज़ब्त करने के लिए मैमोरियल भेजने की तैयारी की। लेकिन आपने मना कर दिया कि इसका परिणाम लाभप्रद न होगा। और सुझाव दिया कि इसका एक ज़बरदस्त उत्तर लिखा जाए। मगर

** यह ह्दय को पीड़ा देने वाली किताब उम्माहातुल मोमिनीन (मोमिनों की मातांए) एक इसाई डाक्टर अहमद शाह मुरतद ने प्रकाशित की थी।*

अन्जूमन वालों ने इस सुजाव का आदर न किया। जिस पर उन्हें ऐसे ही असफल होना पड़ा जिस तरह आपने उनको समय से पूर्व बता दिया था स्वंय हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस मैमोरियल का खुले आम विरोध किया। क्योंकि सैद्धांतिक रूप से इस मैमोरियल का अंत मंजूरी की सूरत में यह था कि इस्लाम की कमज़ोरी प्रमाणित हो। आपने उत्तर देने की विधि को प्राथमिकता दी और सरकार ने आपके मैमोरियल[2] को सम्मान की दृष्टि से देखा । इस तरह आपने मुसलमानों के उचित अधिकार की सुरक्षा की। जो इन्हें इस्लाम के प्रचार और अपने मज़हबों के विरुद्ध लिखने वालों के उत्तर देने का था।

जमाअत को क्रम बद्ध करना और विरोधियों की असफलता

इसी वर्ष आपने अपनी जमाअत के बंधन को मज़बूत करने और सिलसिले की अच्छाइयों को कायम करने के लिए जमाअत के पती पत्नी के अच्छे सम्बन्धों और प्यार के माहौल की तहरीक की और जमाअत को हिदायत फरमाई और जमाअत को निर्देष दिया कि अहमदी अपनी लड़कियाँ ग़ैर अहमदी लोगों को न दिया करें।

इसी वर्ष सरकार को भी आपने खुदाई निशान दिखाने का न्यौता दिया। दरअसल इसी के द्वारा आपको सरकारी कार्य कर्ताओं पर अपने प्रचार का कार्य पूर्ण करना उद्देश्य था जो पूर्ण ढंग से मुकम्मल हो गया।

1898 ई. में आपने अपनी जमाअत के बच्चों के लिए एक हाई स्कूल की नींव रखी। जिसमें अपनी जमाअत के विद्यार्थी चारों ओर से आकर पढ़ें। जिसका उद्देश्य यह था कि दूसरे स्कूलों के प्रभाव से सुरक्षित रहें। पहले वर्ष ये सकूल सिर्फ प्राइमरी तक था। लेकिन हर वर्ष उन्नति करता चला गया और 1903 ई. में मैट्रिकुलेशन की

---

1. लाहोर की अन्जुमन से "अन्जुमन हमायते इस्लाम लाहोर" मुराद है ।

2. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 4 मई 1898 ई. को लैफ़टीनैन्ट गवरनर पंजाब के पास यह मैमोरियल भेजा था कि जब हज़ार कापी इस किताब की मुसलमानों में मुफ़्त बांट कर उन का दिल दुखाया गया है तो इस का ज़ब्त करना व्यर्थ है पादरियों ने ऐसी हज़ारों किताबें लिख कर मुसलमानों का दिल दुखाया है वाद विवाद के इस ढंग में सुधार होना चाहिए और इस प्रकार की दिल दुखाने वाली अपवित्र बातों के प्रयोग से By order रोक देना चाहिए ।

परीक्षा में इसके लड़के शामिल हुए।

1899 ई. में आप पर एक और मुकद्दमा अशान्ति के सम्बन्धित आपके दुश्मनों ने कायम किया। लेकिन इसमें भी आपके दुश्मन अपमानित और असफल हुए और आपको सफलता हुई।

1900 ई. में आपने ईसाई धर्म पर एक वाद-विवाद किया अर्थात आपने लाहौर के बिशप साहिब को खुदाई फैसले का न्यौता दिया । देश के मशहूर अख़बारों ने इस आन्दोलन के बारे में लिखा मगर बिशप साहिब इस मुकाबला में न आ सके।

जमाअत का नाम अहमदी रखना

1901 ई. में जनगणना होने वाली थी इसलिए 1900 ई. के अन्तिम वर्षों में आपने अपनी जमाअत के नाम एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया कि हमारी जमाअत के लोग जनगणना के समय अपने आपको अहमदी मुसलमान लिखवाएंगे। इसी वर्ष आपने अपनी जमाअत को अहमदी का नाम देकर दूसरे मुसलमानों से प्रमुख कर दिया।

दीवार गिराने से सम्बन्धित मुकद्दमा

इसी वर्ष आपके विरोधी सम्बन्धियों ने आपको और आपकी जमाअत को दु:ख देने के लिए मस्जिद के दरवाज़े के आगे एक दीवार बना दी जिसके कारण नमाज़ियों को बहुत दूर से होकर आना पड़ता था और इस तरह बहुत तकलीफ़ होती थी। जब वह किसी तरह न मानें तो मज़बूर होकर जुलाई 1901 ई. में आपको न्यायालय में दावा करना पड़ा और उसी वर्ष अगस्त में उस मुकद्दमें का फ़ैसला आपके पक्ष में हुआ और दीवार गिरा दी गई और मुकद्दमे का खर्चा भी आपके विरोधियों पर डाला गया लेकिन आपने उनको क्षमा कर दी ।

रिव्यू ऑफ़ रिलीजन का प्रारम्भ

1902 ई. में आपने यूरोप में इस्लाम के प्रचार के लिए एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने का हुक्म दिया जो रिव्यू ऑफ़ रिलीजन के नाम से अल्लाह की कृपा से अब तक प्रकाशित हो रही है । इसका एक एडीशन अंग्रेज़ी और एक ऊर्दू में निकलता है। इस रिव्यू के द्वारा अमरीका और यूरोप में बहुत अच्छे तरीके से इस्लाम

का प्रचार हो रहा है और इसके ज़बरदस्त निबन्धों की मित्रों व दुश्मनों दोनों ने प्रशंसा की है प्रारम्भ में जमाअत के दूसरे सदस्यों के अतिरिक्त स्वंय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस पत्रिका के लिए निबन्ध दिया करते थे जो ऊर्दू में लिखे जाते थे फिर उनका अनुवाद अंग्रेज़ी पत्रिका में प्रकाशित होता था। इन निबन्धों का पढ़ने वालों पर गहरा प्रभाव पड़ता था और यही निबन्ध थे जिन्होंने रिव्यू की महानता पहले वर्ष ही स्थापित कर दी थी।

ख़ुतबा-ए-इल्हामिया

इसी वर्ष ईदुज़्ज़ुहा के अवसर पर जो हज के दूसरे दिन होती है अल्लाह के इल्हाम के आदेश अनुसार आपने एक भाषण अरबी भाषा में बिना किसी तैयारी के दिया। उस समय आप एक अजीब अवस्था में थे और आपका चेहरा लाल हो रहा था और चेहरे से नूर (रोशनी) टपकता था और शान से भरपूर था और ऐसा मालूम होता था जैसे निद्रा अवस्था में हैं। ये निबन्ध ऐसा शानदार और इसकी भाषा ऐसी अद्वितीय है कि बड़े-बड़े अरबी विद्वान इसके जैसा नहीं लिख सकते हैं और इसके अन्दर ऐसी सच्चाई ब्यान हुई है कि इन्सान की अकल हैरान हो जाती है। ये निबन्ध ख़ुतबा-ए-इल्हामिया के नाम से प्रकाशित हो चुका है और पूरा अरबी भाषा में है।

अरबी भाषा के प्रचार के लिए

इसी युग में आपने अपनी जमाअत को अरबी सिखाने के लिए एक बहुत अच्छी योजना बनाई जो यह थी कि बहुत साफ़ और आसान भाषा में कुछ वाक्य बनाएं जिन्हें लोग याद कर लें और इस तरह उनको अरबी भाषा में महारत हासिल हो जाए और उन वाक्यों में यह ख़ूबी रखी गई थी कि वह ऐसी बातों से सम्बन्धित होते थे जिनसे मनुष्य को प्रतिदिन काम पड़ता है और जिनमें ऐसी चीज़ों के नाम और ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता था जो मनुष्य प्रतिदिन बोलता है। इससे सम्बन्धित कुछ अध्याय लिखे गए लेकिन बाद में कुछ ज़रूरी कार्यों के कारण ये अध्याय रह गया किन्तु फिर भी आप अपनी जमाअत के लिए एक मार्ग निकाल गए जिस पर चल कर सफलता हो सकती है। आपकी इच्छा थी कि हर एक देश की असल भाषा के इलावा अरबी भाषा भी मुसलमानों की मादरी भाषा हो जाए और स्त्री पुरुष सब इसे

सीखें ताकि भविष्य में आने वाली नस्लों के लिए इसको सीखना आसान हो जाए और बच्चे बचपन में ही अपनी मादरी भाषा के अतिरिक्त अरबी भाषा सीख लें। और यह इरादा था कि जिसके पूरे हुए बिना इस्लाम अपनी जड़ों पर पूरी तरह खड़ा नहीं हो सकता क्योंकि जो जाति अपनी धार्मिक भाषा नहीं जानती वह कभी अपने धर्म से परिचित नहीं हो सकती। और जो जाति अपने धर्म से परिचित नहीं होती वह कभी अपने धर्म के शत्रुओं से सुरक्षित नहीं रह सकती और जो जातियाँ धर्म से परिचित होने के लिए सिर्फ़ अनुवाद पर निर्भर करती हैं वह न धर्म से परिचित रहती हैं और न ही उनकी पुस्तक सुरक्षित रहती है क्योंकि अनुवाद धीरे-धीरे लोगों को असल पुस्तक के अध्ययन से बेख़बर कर देता है क्योंकि अनुवाद असल पुस्तक का प्रतिनिधि नहीं हो सकता इसलिए अन्त में वह जमाअत कहीं से कहीं निकल जाती है। आप के इस इरादा को पूरा करने की ओर आपकी जमाअत का ध्यान है और इन्शा-अल्लाह-ताअला सफलता मिलेगी।

मीनारा-तुल-मसीह की नींव

इस वर्ष हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ भविष्य वाणियों के आधार पर कि मसीह दमिश्क* के पूर्व में एक सफ़ेद मीनार पर उतरेगा। इसलिए आपने एक मीनार की नींव रखी ताकि वह भविष्यवाणी (पेशगोई) शाब्दिक अर्थों में भी पूरी हो जाए। इस भविष्यवाणी के असल अर्थ यह थे कि मसीह मौऊद खुले खुले तर्कों के साथ आएगा और सारे संसार पर इसका प्रताप (जलाल) प्रकट होगा और उसको बहुत सफलता मिलेगी क्योंकि स्वप्न विज्ञान अनुसार मीनार से अभिप्राय वह तर्क हैं जिनका व्यक्ति इन्कार न कर सके और ऊँचाई पर होने का अर्थ ऐसी शान प्राप्त करने के हैं कि जो किसी की नज़र से छुपी न रहे और पूर्व की ओर से आने से अभिप्राय ऐसी उन्नती होती है जिसे कोई न रोक सके।

मुकद्दमा करमदीन (अज़ाला हैसियत उरफ़ी)

1902 ई. के अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर एक व्यक्ति करमदीन ने अज़ाला हैसियत उरफ़ी का मुकद्दमा किया और जेहलम के स्थान पर

** सीरीया की राजधानी।*

अदालत में उपस्थित होने के लिए आपके नाम समन जारी हुआ। आप जनवरी 1903ई. में वहां चले गए यह यात्रा आपकी सफलता की ओर बढ़ने का प्रथम चिन्ह था कि आप एक फौजदारी मुकद्दमा के लिए जा रहे थे लेकिन फिर भी भीड़ का यह हाल था कि इसका कोई अन्दाज़ा नहीं हो सकता। जिस समय आप जेहलम के स्टेशन पर उतरे हैं वहां उस समय लोगों की इतनी भीड़ थी कि प्लेट फार्म पर खड़े होने की जगह नहीं थी बल्कि स्टेशन के बाहर भी सड़कों के दोनों तर्फ लोगों की इतनी भीड़ थी कि गाड़ी का गुज़रना मुश्किल हो गया था। यहां तक कि ज़िला अधिकारियों को इसके लिए विशेष प्रबन्ध करना पड़ा और ग़ुलाम हैदर साहिब तहसीलदार इस विशेष ड्यूटी पर लगाए गए आप हज़रत साहिब के साथ बहुत मुश्किल से रास्ता बनाते हुए गाड़ी को ले गए क्योंकि शहर तक लोगों की भीड़ के कारण रास्ता न मिलता था। शहर के निवासियों के अतिरिक्त गाँवों से भी हज़ारों व्यक्ति आपके दर्शन के लिए आए थे। लगभग एक हज़ार व्यक्तियों ने इस स्थान पर बैअत की और जब आप अदालत में उपस्थित होने के लिए गए तो इतना ज़्यादा लोग मुकद्दमा की कारवाई सुनने के लिए उपस्थित थे कि अदालत को प्रबन्ध करना मुश्किल हो गया। दूर तक लोग फैले हुए थे। पहली ही पेशी में आपको बरी कर दिया गया और आप ठीक-ठाक वापिस आ गए।

जमाअत की उन्नति और करमदीन वाले मुकद्दमे का लम्बा होना

1903 से आप की उन्नति आश्चर्यजनक तरीके से आरम्भ हो गई और कई बार एक एक दिन में पांच पांच सौ व्यक्ति बैअत के पत्र लिखते थे और आप के मानने वाले अपनी गिन्ती में हज़ारों लाखों तक पहुँच गए- हर प्रकार के लोगों ने आप के हाथ पर बैअत की और यह सिलसिला बड़े ज़ोर से फैलना आरम्भ हो गया और फिर दूसरे राज्यों में भी फैलना आरम्भ हो गया इसी साल जमाअते अहमदिया के लिए एक दु:खदायी दुर्घटना सामने आई कि क़ाबुल में इस जमाअत के एक नेक सदस्य को धार्मिक विरोधता के कारण संगसार किया गया (पत्थरों से मारा गया।)

मुकद्दमे का सिलसिला जो ज़ेहलम में आरंम्भ होकर पूरी तरह से ख़त्म हो गया था फिर बहुत जोर से आरम्भ हो गया अर्थात करमदीन जिसने पहले वहां आप के

विरुद्ध मुकद्दमा किया था उसी ने फिर गुरदासपुर में आप पर अज़ाला हैसियत ऊरफ़ी का दावा कर दिया इस मुकद्दमे को इतना लम्बा कर दिया जिसे देख कर आश्चर्य होता है। इस मुकद्दमे की कार्यवाही के दौरान एक मैजिस्ट्रैट भी बदल गया और इस की पेशिया ऐसे थोड़े अन्तर से रखी गईं कि आख़िर मजबूर हो कर आपको गुरदासपुर में ही रहना पड़ा इस मुकद्दमा को बहुत अधिक लम्बा कर दिया गया था सिर्फ तीन चार शब्दों पर बातचीत करनी थी करमदीन ने आपके विरुद्ध एक सफेद झूठ बोला था आप ने उसके लिए अपनी पुस्तक में कज़्ज़ाब का शब्द लिखा था जिसका अर्थ अरबी भाषा में झूठा भी है और बहुत झूठा भी इसी तरह एक शब्द लईम भी है जिसका अर्थ कमीने (दुष्ट) के हैं। लेकिन कभी वल्दुज़्ज़िना (हरामी औलाद) के अर्थों में भी प्रयोग हो जाता है! और इसका ज़ोर इस बात पर था कि मुझे बहुत झूठा और वल्दुज़्ज़िना कहा गया है। हालांकि अगर साबित है तो यह कि मैंने एक झूठ बोला है इस पर न्यायालय में इन शब्दों की जांच पड़ताल आरम्भ हुई और कई इस प्रकार के और बारीक प्रश्न पैदा हो गए जिन पर ऐसी लम्बी बहस छिड़ी कि दो वर्ष इन मुकद्दमों में लग गए । मुकद्दमें के बीच में एक मैजिस्ट्रैट के बारे में प्रसिद्ध हुआ कि इसके सध्धर्मियों ने कहा है कि मिर्ज़ा साहिब इस समय ख़ूब फंसे हुए हैं। इनको सज़ा अवश्य दो चाहे एक दिन की कैद क्यों न हों जिन मित्रों ने यह बात सुनी तो बहुत घबराए हुए आपके पास आए और बहुत डर कर बोले कि हज़रत हम ने ऐसा सुना है आप इस समय लेटे हुए थे यह बात सुनते ही आप का चेहरा लाल हो गया और आप एक हाथ के सहारे से उठ कर बैठे और उठ कर बहुत ज़ोर से फ़र्माया कि क्या वह ख़ुदा तआला के शेर पर हाथ डालना चाहता है! अगर उसने ऐसा किया तो वह देख लेगा कि इसका क्या परिणाम होगा न मालूम यह सूचना सच्ची है या झूठी लेकिन इस मैजिस्ट्रेट को इन्ही दिनो वहां से बदल दिया गया और प्रयत्नों के बावजूद फौजदारी अधिकार उससे ले लिए गए और कुछ समय के बाद उसका दर्जा भी कम कर दिया गया इसके बाद मुकद्दमा एक और मैजिस्ट्रेट के समाने आया उसने भी ना मालूम क्यों इसको बहुत लम्बा किया और डिस्ट्रिकट मजिस्ट्रेट वकील के न्यायालय में तो आपको कुर्सी मिलती थी लेकिन इस मैजिस्ट्रेट ने बावजूद आप के बहुत बीमार होने के आपको कुर्सी न दी और कई बार प्यास की हालत में पानी पीने तक की आज्ञा न दी । आखिर एक लम्बे मुकदमा के बाद आप पर दो सौ रुपैय जुर्माना किया

इस पर सैशन जज साहिब अमृतसर सर मिस्टर हरी साहिब के न्यायालय में जो एक युरोपियन थे इस फैसला की देखभाल की गई और जब उन्होंने मुकद्दमे की मिसल देखी तो बहुत अफसोस किया कि ऐसे झूठे मुकद्दमें को मैजिस्ट्रेट ने इतना लम्बा क्यों किया और कहा कि अगर यह मुकद्दमा मेरे पास आता तो मैं एक दिन में इसे समाप्त कर देता करमदीन जैसे मनुष्य को जो शब्द मिर्ज़ा साहिब ने प्रयोग किए अगर उन से बढ़ कर भी कहे जाते तो बिल्कुल सही होते जो कुछ हुआ बहुत ही अनुचित हुआ और दो घण्टे के भीतर आपको बरी कर दिया और जुर्माना मुआफ़ कर दिया और इस तरह दूसरी बार एक युरोपियन शासक ने अपने कार्य से साबित कर दिया कि ख़ुदा ताअला शासन उन्हीं लोगों के हाथों में देता है! जिनको वह इस योग्य समझता है। इस मुकद्दमे का फैसला जनवरी 1905 में हुआ और इस फैसला के साथ ख़ुदा ताअला ने जो वही (इल्हाम का आदेश जो पैग़म्बर पर उतरे) आप पर कई साल पहले मुकद्दमे के परिणाम के बारे में की थी वह पूरी हुई।

इस मुकद्दमें की कार्यवाही को एक जगह ब्यान करने के लिए मैं आपके दो ज़रूरी सफ़र छोड़ गया हूँ जिनमे से आपका पहला सफ़र तो लाहौर की ओर था जो मुकद्दमे के बीच में अगस्त के महीने में 1904 में हुआ इस बार आप लाहौर में पन्द्रह दिन रहे इस यात्रा में भी लोग आप से मिलने के लिए बहुत चाव से आए और स्टेशन पर तिल धरने को स्थान न था और सारा समय एक शोर पड़ा रहा आपके रहने के स्थान के नीचे सुबह से शाम तक बराबर एक भीड़ रहती विरोधी आ आ कर गालियाँ देते और शोर मचाते यहाँ तक कि कई विरोधियों ने औरतों के रहने की जगह में घुसने का प्रयत्न किया जिन्हे ज़बरदस्ती बाहर निकाला गया लाहौर के मित्रों की प्रार्थना पर आप का लैक्चर (भाषण) निश्चित हुआ जो छापा गया और एक बड़े हाल में वह मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम ने पढ़ कर सुनाया आप अलैहिस्सलाम भी निकट ही बैठे थे लगभग सात आठ हज़ार व्यक्ति थे इस लैक्चर के समाप्त होने पर व्यक्तियों ने प्रार्थना की कि आप कुछ ज़बानी भी बयान फ़र्माएँ इस पर आप उसी समय खड़े हो गए और आधे घण्टे तक एक छोटी सी तकरीर फ़र्माई।चूंकि यह एक अनुभव वाली बात थी कि आप जहाँ जाते हर धर्म तथा कौम के लोग आपके विरुद्ध जोश दिखलाते विशेषतय: मुसलमान कहलाने वाले। इसलिए पुलिस के अफ़सरों ने इस बार बहुत अच्छा प्रबन्ध किया हुआ था देसी पुलिस के अतिरिक्त युरोपियन

सिपाही भी प्रबन्ध के लिए लगाए गए थे जो तलवारें हाथ में लिए थोड़ी थोड़ी दूरी से खड़े हुए थे चूँकि पुलिस अफ़सरों को पता चल गया था कि कई असभ्य व्यक्ति जलसा गाह से बाहर झगड़े के लिए तैयार हैं इसलिए उन्होंने आप की वापसी के लिए अच्छा प्रबन्ध कर रखा था और कई सवार कुछ दूरी पर आगे आगे चले जाते और पीछे आपकी गाड़ी थी गाड़ी के पीछे फिर कुछ पुलिस के युवक थे और इन के पीछे चलने वाले पुलिस के आदमी। इस तरह बड़ी सुरक्षा से आपको घर पहुँचाया गया और चालबाज़ों को अपनी शैतानी में सफ़लता प्राप्त न हो सकी वहाँ से आप वापिस गुरदासपुर आ गए और अन्त अक्तूबर 1904 में आप गुरदासपुर के मुकद्दमें से किसी तरह फ़ुरसत पाकर क़ादियान आ गए 27 अक्तूबर को स्यालकोट गए क्योंकि वहाँ के मित्रों ने आग्रह कर के वहाँ लेकर जाने की प्रार्थना की थी और कहा था कि आप अपनी आरंभिक आयु में कई वर्ष यहाँ रहे और अब भी जबकि ख़ुदा ताअला ने आपको बहुत बड़ी शान से सफ़लता दी है। एक बार इस तरफ़ कदम रख कर इस भूमि को बरकत दें यहाँ की यात्रा भी आपकी सफलता का स्पष्ट सबूत था क्योंकि हर एक स्टेशन पर आप से मिलने के लिए बहुत अधिक जनता आई थी कि स्टेशन के अधिकारियों को प्रबन्ध करना मुश्किल हो जाता था और लाहौर के स्टेशन पर तो इतनी भीड़ हुई कि प्लेटफ़ार्म टिकट समाप्त हो गए और स्टेशन मास्टर को बिना टिकट ही लोगों को भीतर आने की आज्ञा देनी पड़ी जब आप स्यालकोट पहुंचे तो स्टेशन से आप के रहने का स्थान जो मील भर की दूरी पर था बराबर व्यक्तियों की भीड़ थी शाम के समय गाड़ी स्टेशन पर पहुँची तो यात्रियों के गाड़ी में चढ़ने चढ़ाने से देर लग गई और आप की गाड़ी अभी थोड़ी ही दूर चलने पाई थी कि अन्धेरा हो गया लोगों की भीड़ की वजह से और रात हो जाने से यह शक हुआ कि कहीं कुछ व्यक्ति गाड़ी के नीचे न आ जाएं इसलिए पुलिस को इस बार का ख़ास प्रबन्ध करना पड़ा कि आप के आगे आगे रास्ता साफ़ रहे स्यालकोट के एक बहुत अमीर और ईमानदार आनरेरी मैजिस्ट्रेट पुलिस के साथ इस कार्य पर थे उनको बड़ी मुश्किल और सखती से रास्ता साफ कराना पड़ता था और गाड़ी बहुत ही धीरे-धीरे चल सकती थी गाड़ी की खिड़कियाँ खोल दी गई थीं बाज़ार और गलियों में व्यक्ति दोनों ओर खड़े होने के अतिरिक्त दुकानों के बरामदे भी भरे हुए थे और कई तो स्थान न मिलने की वजह से खिड़कियों के छज्जों पर चढ़े बैठे थे सारी छतों पर हिन्दुओं और मुसलमानों

ने आपकी शक्ल देखने के लिए हडिंया और लैम्प जला रखे थे और छतें औरतों और आदमियों से भरी पड़ी थी जो आप की गाड़ी के निकट आने पर मशाल आगे कर कर के आप की शक्ल देखते थे। और कई व्यक्ति आप पर फूल फेंकते थे।

लैक्चर स्यालकोट

स्यालकोट में आप पाँच दिन रहे और तबलीग़ (प्रचार) के अतिरिक्त जो आप घर पर मिलने वालों को करते रहते थे आप का एक पब्लिक लैक्चर भी वहाँ हुआ जिस समय लैक्चर की घोषणा हुई उसी समय स्यालकोट के उलामा ने बड़े ज़ोर से घोषणा की कि कोई व्यक्ति मिर्ज़ा साहिब का लैक्चर (भाषण) सुनने न जाए और यह भी फ़तवा दे दिया कि जो व्यक्ति आप का भाषण सुनने जाएगा उस का निकाह टूट जाएगा (यह एक ज़बरदस्त हथियार उस समय से हिन्द के उलामा के पास जिससे वह अनपढ़ मुसलमानों पर अपना शासन कायम रखते हैं। और जिसके लिए झूठी सच्ची कोई भी दलील उनके पास नहीं है) और इस घोषणा को ही बहुतों न समझा गया बलिक जिस मकान में आप का भाषण था उसके मुकाबले कुछ विरोधी मौलवियों ने अपने भाषणों की घोषणा कर दी ताकि व्यक्ति आपके भाषणों में इकट्ठे न होने पाएँ और बाहर के बाहर ही रुक जाएँ इसके अतिरिक्त कुछ व्यक्ति लैक्चर स्थान के दरवाज़े पर भी नियुक्त कर दिय ताकि अन्दर जाने वालों को रोकें और बताएँ कि आपके भाषण में जाना गुनाह है। और कुछ तो इतने आगे बढ़ गए थे कि आने वालों को पकड़-पकड़ कर दूसरी ओर ले जाते थे मगर इसके बावजूद भी लोग बहुत अधिक आए और जिस समय लोगों ने सुना कि आप लैक्चर देने आ गए हैं। तो विरोधी उलामा (मौलवी) का भाषण छोड़कर वहाँ भाग आए और बहुत अधिक चाव से लोगों ने भाग लिया कि सरकारी कर्मचारी छुट्टी का दिन न होने पर भी भाषण में इकट्ठे हुए यह भाषण भी छपा हुआ है। और मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ी अल्लाह अन्हु ने पढ़ कर सुनाया था भाषण के बीच में कुछ व्यक्तियों ने शोर मचाना चाहा पुलिस अफसर ने जो एक युरोपियन साहिब थे बहुत होशियारी से उनको रोका और एक बड़ी अच्छी बात फ़र्माई कि तुम मुसलमानों को इनके भाषण पर घबराने की क्या वजह है। तुम्हारा तो यह समर्थन करते हैं। और तुम्हारे रसूल की महानता कायम करते हैं। नाराज़ होने का अधिकार तो हमारा था कि जिनके ख़ुदा (मसीह) की मृत्यु

साबित करने पर यह इतना अधिक ज़ोर देते हैं। इस तरह पुलिस के अफसरों की होशियारी की वजह से कोई लड़ाई झगड़ा न हुआ इस भाषण में एक विशेषता यह थी कि आपने पहली बार अपने आपको हिन्दुओं के सामने पब्लिक में कृष्ण के रूप में पेश किया जब भाषण समाप्त कर के घर को आने लगे तो कुछ व्यक्तियों ने पत्थर मारने का इरादा किया लेकिन पुलिस ने इस झगड़े को भी रोका।

भाषण के बाद दुसरे दिन आप वापिस आए और इस अवसर पर भी पुलिस के प्रबन्ध की वजह से कोई शरारत न हो सकी जब लोगों ने देखा कि हमें दुख देने का कोई अवसर न मिला तो कुछ लोग शहर से कुछ दूर बाहर जा कर रेल की सड़क के पास खड़े हो गए और चलती हुई ट्रेन पर पत्थर फेंके लेकिन इसका परिणाम सिवाए कुछ शीशे टूट जाने के और क्या हो सकता था।

मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो की मृत्यु और देहली की यात्रा के हालात

11 अक्तूबर 1905 को आप अलैहिस्सलाम के एक सदभावक अनुयायी मौलवी अबदुल करीम साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो जो विभिन्न अवसरों पर आप के भाषण सुनाया करते थे की मृत्यु एक लम्बी बीमारी के बाद हुई। और आपने क़ादियान में एक अरबी पाठशाला खोलने का आदेश दिया जिसमें इस्लाम धर्म से परिचित विध्वान पैदा किए जाएँ ताकि मरने वाले विध्वानों का स्थान ख़ाली न रहे । मौलवी अबदुल करीम साहिब रज़ी अल्लाह अन्हुम की मृत्यु के कुछ दिन बाद आप देहली चले गए और वहाँ लगभग पन्द्रह दिन रहे उस समय देहली पन्द्रह साल पहले की देहली न थी जिसने दीवाना वार शोर मचाया था लेकिन फिर भी आपके जाने पर ख़ूब शोर होता रहा इस पन्द्रह दिन के अन्दर आपने देहली में कोई पब्लिक भाषण न दिया लेकिन घर पर लगभग प्रतिदिन भाषण होते रहे जिन में स्थान की तंगी की वजह से दो अढ़ाई सौ से अधिक व्यक्ति एक समय में इकट्ठे हो सकते थे। एक दो दिन लोगों ने शोर भी किया और एक दिन आक्रमण करके घर पर चढ़ जाने का भी इरादा किया लेकिन फिर भी पहली यात्रा के मुकाबले बहुत अन्तर था।

इस योत्रा से वापसी पर लुधियाना की जमाअत ने दो दिन के लिए आपको लुधियाना में ठहराया और आपका एक पब्लिक भाषण बहुत ही अच्छी तरह से हुआ।

वहाँ अमृतसर की जमाअत का एक दल पहुंचा कि आप एक दो दिन अमृत्सर भी ठहरें जिसे हज़रत अलैहिस्सलाम ने मन्ज़ूर फ़र्माया और लुधियाना से वापसी पर अमृतसर में उतर गए वहाँ भी आपके एक आम भाषण का सुझाव दिया गया। अमृतसर सिलसिला अहमदिया के विरोधियों से भरा था और मौलवियों का वहाँ बहुत ज़ोर था । उनके भड़काने पर लोग शोर करते रहे जिस दिन आपका भाषण था उस दिन विरोधियों ने निर्णय कर लिया कि जिस तरह हो भाषण न होने दें। आप भाषण हाल में चले गए तो देखा कि दरवाज़े पर मौलवी बड़े-बड़े चोगे पहने हुए लम्बे-लम्बे हाथ मार कर आपके विरुद्ध बोल रहे थे। और बहुत से लोगों ने अपनी झोलियों मे पत्थर भरे हुए थे आप भाषण स्थल में अन्दर चले गए और भाषण आरम्भ किया लेकिन मौलवियों को आलोचना का कोई अवसर न मिला जिस पर लोगों को भड़काएँ पन्द्रह मिन्ट आपके भाषण को हो चुके थे कि एक व्यक्ति ने आपके आगे चाय की प्याली रखी क्योंकि आपके गले में दर्द था और ऐसे समय में थोड़े-थोड़े समय पश्चात् कोई तरल पदार्थ प्रयोग किया जाए तो आराम रहता है। आपने हाथ से इशारा किया कि रहने दो लेकिन उसने आप अलैहिस्सलाम की तकलीफ़ को समझ कर प्याली आगे कर ही दी। इस पर आपने भी उसमें से एक घूँट पी लिया लेकिन वह रमज़ान का महीना था। मौलवियों ने शोर मचा दिया कि यह व्यक्ति रमज़ान शरीफ़ में रोज़े नहीं रखता आपने उत्तर दिया कि क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह ताअला फ़र्माता है कि बीमार या यात्री रोज़ा (व्रत) न रखे बल्कि जब आराम आ जाए या यात्रा से वापिस आ जाए तो रोज़ा (व्रत) रखे और मैं तो बीमार भी हूँ और यात्री भी लेकिन जोश में भरे हुए लोग कब रुकते हैं। शोर बढ़ता गया और पुलिस के प्रयत्नों के बावजूद शान्त न हो सका। आख़िर आप बैठ गए और एक व्यक्ति को नज़्म (कविता) पढ़ने के लिए खड़ा कर दिया गया उसके कविता पढ़ने पर लोग चुप हो गए तब फिर आप खड़े हुए तो मौलवियों ने शोर मचा दिया और जब आप ने भाषण जारी रखा तो लड़ाई के लिए तैयार हो गए और स्टेज पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े पुलिस ने रोकने का प्रयत्न किया परन्तु हज़ारों व्यक्तियों की लहर उनसे रुकती न थी और ऐसा लगता था कि समुद्र की एक लहर है जो आगे ही बढ़ती चली आती है। जब पुलिस से उनका संभालना कठिन हो गया तब आपने भाषण छोड़ दिया लेकिन फिर भी लोगों का जोश ठण्डा न हुआ और उन्होंने स्टेज पर चढ़कर

आक्रमण करने का प्रयत्न किया इस पर पुलिस इंस्पैक्टर ने आपसे कहा कि आप अन्दर के कमरे में चले जाएँ और जल्दी सिपाही दौड़ाए कि बन्द गाड़ी ले आएँ पुलिस लोगों को इस कमरे में आने से रोकती रही और दूसरे दरवाज़े के सामने गाड़ी लाकर खड़ी कर दी गई आप उसमें बैठने के लिए चल पड़े। लोगों को पता चल गया कि आप गाड़ी में बैठ कर जाने लगे हैं। इस पर जो लोग भाषण हाल से बाहर खड़े थे वह आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े और एक व्यक्ति ने बहुत ज़ोर से एक मोटा सोटा आपको मारा आपका एक मानने वाला पास ही खड़ा था जल्दी ही आप को बचाने के लिए आपके और आक्रमण करने वाले के बीच में आ गया क्योंकि गाड़ी का दरवाज़ा खुला था। सोटा उस पर रुक गया और उस व्यक्ति के बहुत कम चोट आई वरना उस व्यक्ति का ख़ून हो जाता। आपके गाड़ी में बैठने पर गाड़ी चली लेकिन लोगों ने पत्थरों की बारिश आरम्भ कर दी गाड़ी की खिड़कियाँ बन्द थीं उन पर पत्थर पड़ते थे तो वह खुल जाती थीं । हम उन्हें पकड़ कर सम्भालते थे लेकिन पत्थरों की बौछार के कारण वह हाथों से छूट-छूट कर गिर जाती थीं लेकिन अल्लाह ताअला के फ़ज़ल से किसी को चोट नहीं आई सिर्फ़ एक पत्थर खिड़की में से गुज़रता हुआ मेरे छोटे भाई के हाथ पर लगा क्योंकि पुलिस गाड़ी के चारों तरफ़ खड़ी थी बहुत से पत्थर उन्हें लगे जिस पर पुलिस ने लोगों को वहाँ से हटाया और गाड़ी के आगे पीछे बल्कि उसकी छत पर भी पुलिस के आदमी बैठ गए और गाड़ी को घर तक पहुँचाया । लोगों में इतना अधिक जोश था कि पुलिस की हाज़री के बावजूद वह दूर तक गाड़ी के पीछे भागे। दूसरे दिन आप क़ादियान वापिस आ गए।

मृत्यु की भविष्यवाणी तथा सिलसिला की प्रणाली सदर अन्जुमन की नियुक्ति

दिसम्बर 1905 ई. में आपको इल्हाम (आकाशवाणी) हुआ कि आप की मृत्यु निकट है। जिस पर आपने एक पत्रिका "अलवसिय्यत" लिख कर अपनी सारी जमाअत में छपवाया और उसमें जमाअत को समाचार दिया कि मेरी मृत्यु निकट है और उनको तसल्ली दी और खुदाई इल्हाम के अनुसार एक मकबरा बनाने की घोषणा की और उसमें दफ़न होने वालों के लिए यह शर्त निश्चित की कि वह अपनी सारी सम्पत्ति का दसवां भाग इस्लाम को फैलाने के लिए दें और लिखा कि मुझे अल्लाह

ताअला ने ख़ुशख़बरी दी है कि इस मकबरे में केवल वही दफ़न हो सकेंगे जो स्वर्गी होंगे और उस धन की रक्षा के लिए जो इस मकबरा में दफ़न होने के लिए लोग इस्लाम के प्रचार के लिए देगें एक अन्जुमन कायम की। इस प्रबन्ध के अतिरिक्त यह भी भविष्यवाणी की कि जमाअत की रक्षा और उसको सम्भालने के लिए ख़ुदा ताअला स्वंय मेरी मृत्यु के पश्चात् उसी प्रकार प्रबन्ध करेगा जिस प्रकार पहले नबियों के बाद करता रहा है और ऐसे लोगों को खड़ा करता रहेगा जो जमाअत की देख भाल उसी प्रकार करेंगे जिस तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह अनहो ने की थी। सिलसिला की शैक्षणिक और प्रचारिक कार्यों के लिए अल वसीयत के प्रकाशन तक मदरसा और मैग्ज़ीन की प्रबन्धकीय कमेटियाँ थीं और मकबरा के लिए एक नवीन संस्था आयोजित की गई परन्तु ख़ुद्दाम की प्रार्थना पर दिसम्बर 1906 ई. में आपने इस अन्जुमन की बजाए जिसे वसिय्यतों के माल की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया था एक ऐसी अन्जुमन नियुक्त कर दी जिसके अधीन दीनी और सांसारिक शिक्षा के मदरसे, रिव्यु ऑफ़ रीलिजन, मकबरा बहिशाती आदि सब कार्य अलग-अलग कर दिए गए और विभिन्न अन्जुमन की बजाए एक ही सदर अन्जुमन की नियुक्ति कर दी।

1907 ई. में सितम्बर के महीने में आप का लड़का मुबारक अहमद इस भविष्यवाणी के अनुसार जो उनके जन्म के समय ही प्रकाशित कर दी गई थी। साढ़े आठ साल की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

इसी वर्ष सदर अन्जुमन की विभिन्न शहरों में शाख़ें नियुक्त करने की सलाह दी गई। अमरीकन दो आदमी और एक औरत आपसे मिलने के लिए आए जिनसे देर तक वार्तालाप हुई और इन्हें मसीह के दोबारा अवतरित होने की वास्तविक्ता समझाई। इसी वर्ष पंजाब में कुछ विरोध उत्पन्न हो गया इस पर आपने अपनी जमाअत को सरकार का हर प्रकार से वफ़ादार रहने के लिए कहा और विभिन्न भागों पर आपकी जमाअत ने इस शोर को दूर करने में बिना किसी लालच के सेवा की।

दिसम्बर में आरियों ने लाहौर में एक धार्मिक अधिवेशन मनाया और प्रत्येक धर्मों के लोगों को इसमें सम्मिलित होने के लिए बुलाया। परन्तु यह शर्त रखी गई कि किसी धर्म के अनुयायीओं को दूसरे धर्म पर आक्रमण करने की आज्ञा न होगी तथा स्वंय भी इस रोक को स्वीकार किया। आप अलैहिस्सलाम से भी इसमें सम्मिलित

होने की प्रार्थना की गई तो आपने उसी समय कह दिया कि मुझे इस सुझाव में धोखे की बदबू आती है। लेकिन फिर भी हुज्जत (दलील) पूरी करने के लिए एक निबन्ध लिख कर उसमें पढ़ने के लिए भेज दिया। इस बिन्ध में आपने आरियों को बड़े ज़ोर के साथ सन्धि का न्यौता दिया। और बड़ी नम्रता से सिर्फ़ इस्लाम की विशेषताएँ उनके सामने रखीं। हमारी जमाअत के लगभग पाँच सौ व्यक्ति टिकट खरीद कर इस अधिवेशन में सम्मिलित होते रहें और हमारे कारण दूसरे मुसलमान भी शामिल होते रहे लेकिन जब आरियों की बारी आई तो उन्होंने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियाँ दीं और बुरे से बुरे शब्द हुज़ूर के प्रति प्रयोग किए परन्तु हम आप अलैहिस्सलाम की शिक्षा के अधीन उन भाषणों को सुनते रहे और किसी ने उठकर इतना भी नहीं कहा कि हमारे साथ धोखा किया गया। वचन भंग किया गया है।

31 मार्च 1908 ई. में सर विल्सन साहिब बहादुर फनानशल कमिश्नर सूबा पंजाब क़ादियान में आए क्योंकि यह पहला मौका था कि पंजाब का एक ऐसा आदरणीय व उच्च अधिकारी क़ादियान आया। आप अलैहिस्सलाम ने पूरी जमाअत को इनके स्वागत का आदेश दिया और अपने सकूल के मैदान में उनका डेरा लगवाया। और उनकी दावत भी की क्योंकि आपके संबंध में आपके विरोधियों ने यह प्रसिद्ध कर दिया था कि आप पीठ पीछे सरकार के विरोधी हैं क्योंकि उच्च अधिकारियों से बावजूद अपने पुराने पारिवारिक सम्बन्धों के कभी नहीं मिलते थे। आपने इस इलज़ाम को दूर कर दिया और फनानशल कमिश्नर साहिब से मुलाकात के लिए स्वंय चले गए। उस समय आपके साथ सात आठ व्यक्ति आपकी जमाअत के भी थे।

आदर के साथ अपने डेरे के दरवाज़े पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्वागत किया। और आपसे विभिन्न मामलों में आपके सिलसिला के संबंध में पूछते रहते परन्तु इस सारी वार्तालाप में एक बात विशेष रूप से वर्णन योग्य है। उन दिनों मुस्लिम लीग नई नई स्थापित हुई थी और अंग्रेज़ पदाधिकारी इसके संविधान से प्रसन्न थे कि उनके ख़्याल में काँग्रेस की कमियों को दूर करने के लिए यह एक ज़बरदस्त आला प्रमाणित होगी। और कुछ अधिकारी धनवानों को इसमें सम्मिलित होने का सुझाव भी देते थे। फनानशल कमिश्नर ने भी आपसे मुस्लिम लीग का वर्णन किया और इसके बारे में आपकी राय जाननी चाही। आपने फ़र्माया कि मैं इसे पसन्द

नहीं करता। फनानशल कमिश्नर ने इसकी विशेषता को मान लिया। आपने कहा कि यह रास्ता ख़तरनाक है। उन्होंने कहा आप इसे काँग्रेस का विचार न समझें। इसकी नियुक्ति तो ऐसे रंग में हुई थी कि इसका अपनी माँनों में बढ़ जाना आरम्भ से नज़र आ रहा था। लेकिन मुस्लिम लीग की नींव ऐसे लोंगों के हाथों और ऐसे कानूनों की मदद से पड़ी है कि यह कभी काँग्रेस का रंग पकड़ ही नहीं सकती। इस पर आपके अनुयायी ख़्वाजा कमालुद्दीन ने जो वोकिंग मिश्न के संस्थापक और पत्रिका मुस्लिम इण्डिया के मालिक थे सर विल्सन का समर्थन किया और कहा कि मैं भी इसका सदस्य हूँ। इसके ऐसे नियम बनाए गए हैं कि इसके गुमराह होने का भय नहीं। परन्तु दोनों के उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद ने फ़र्माया कि मुझे तो इससे बदबू आती है कि एक दिन यह भी काँग्रेस का रंग नहीं ले सकती। मैं इस प्रकार राजनीति में हस्तक्षेप करना ख़तरनाक समझता हूं। यह चर्चा तो इस पर समाप्त हुई परन्तु प्रत्येक राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन करने वाला जानता है कि आपका विचार किस प्रकार अक्षर-अक्षर पूरा हुआ।

इसी वर्ष 26 अप्रैल को अपनी माता जी की बीमारी के कारण आपको लाहौर जाना पड़ा। जिस दिन क़ादियान से चलना था उसी रात आपको इल्हाम हुआ

अर्थात् सांसारिक घटनाओं से निडर मत हो। इस पर आप ने फ़र्माया आज यह इल्हाम हुआ है कि जो किसी भयानक घटना की ओर संकेत करता है। संयोग वश उसी रात मेरे छोटे भाई मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद बीमार हो गए। परन्तु जिस प्रकार से हो सका चल पड़े। जब बटाला पहुंचे जो क़ादियान का स्टेशन था तो वहाँ पता लगा कि सरहदी गड़बड़ के कारण गाड़ीयाँ काफ़ी नहीं इसी लिए गाड़ी रिज़र्व न हो सकी। वहाँ दो तीन दिन प्रतीक्षा करनी पड़ी। आपने अपने घर में फ़र्माया कि इधर डराने वाला इल्हाम (अकाशवाणी) हुआ है उधर अल्लाह ताअला की ओर से रोकें पड़ रहीं हैं। अच्छा है कि यहीं बटाला में ही कुछ पल के लिए ठहर जाएँ। वातावरण बदल जाएगा। इलाज के लिए कोई लेडी डाक्टर यहाँ बुला ली जाएगी। लेकिन उन्होंने जिद्द की कि नहीं लाहौर ही चलो आख़िर दो तीन दिन के बाद आप लाहौर आ गए। आप के पहुँचते ही लाहौर में एक शोर मच गया और मौलवी आपके विरुद्ध इकट्ठे हो गए। जिस मकान में आप उतरे थे उसके पास ही एक मैदान में आपके विरुद्ध लैक्चरों

(भाषणों) का एक सिलसिला आरम्भ हुआ। जो प्रतिदिन असर की नमाज़ के बाद से लेकर रात नौ-दस बजे तक जारी रहता था। इन लैक्चरों में गन्दी से गन्दी गालियाँ आप को दी जातीं। और क्योंकि आपके मकान तक पहुंचने का यही रास्ता था आपकी जमाअत को सख़्त परेशानी होती परन्तु आपने सबको समझा दिया कि गालियों से हमारा कुछ नहीं बिगड़ता तुम लोग खामोश होकर पास से चले जाया करो। उधर देखा भी न करो। क्योंकि इस बार लाहौर में कुछ अधिक रहने का इरादा था इसलिए जमाअत के व्यक्ति चारों ओर से इकट्ठे हो गए थे और हर समय भीड़ रहती थी और लोग भी आपसे मिलने के लिए आते रहते थे।

लाहौर के अमीर लोगों का स्वागत तथा हज़ूर अलैहिस्सलाम का भाषण

हिन्दुस्तान के धनी लोग बल्कि यह कहना चाहिए कि सारी दुनिया के धनी लोग धर्म से बेख़बर होते हैं। इस लिए आप ने उनको कुछ सुनाने के लिए यह सुझाव दिया कि लाहोर के एक ग़ैर-अहमदी ने जो आपका श्रद्धालु था धनियों को न्यौता दिया। और खाने के समय कुछ भाषण दिया। भाषण अधिक लम्बा हो गया। जब लगभग एक घंटे का समय गुज़र गया तो एक व्यक्ति ने घबराहट का प्रकटन किया तो इस पर बहुत से लोग बोल उठे कि ख़ाना तो हम प्रतिदिन खाते हैं परन्तु यह खाना (गिज़ा-ए-रूह) तो आज मिली है आप भाषण जारी रखें। दो अढ़ाई घंटे तक आपका भाषण होता रहा। उस भाषण के कारण लोगों में यह खयाल पैदा हो गया कि आपने अपना नबुव्वत का दावा वापिस ले लिया। लाहौर के ऊर्दू दैनिक अख़बार-ए-आम ने यह ख़बर प्रकाशित कर दी। इस पर आपने उसी समय इसका खण्डन किया और लिखा कि मेरा नबुव्वत का दावा है और मैंने इसे कभी वापिस नहीं लिया हमें केवल इस बात से इन्कार है कि हम कोई नयी शरीअत लाये हैं। शरीअत वही है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए थे।

हज़ूर अलैहिस्सलाम का निधन

आपको हमेशा पेट की ख़राबी की शिकायत रहती थी। लाहौर आने पर यह बीमारी ज़्यादा बढ़ गई तथा मिलने वालों की हर समय भीड़ लगी रहती थी इसलिए

आपको आराम भी न मिला। आप उसी अवस्था में थे कि आपको इल्हाम हुआ

अर्थात प्रस्थान करने का समय आ गया फिर प्रस्थान करने का समय आ गया। इस इल्हाम पर लोगों को परेशानी हुई। परन्तु उसी समय क़ादियान से एक बहुत ही प्यारे मित्र की मृत्यु की सूचना मिली और लोगों ने यह इल्हाम उससे सम्बन्धित समझा और उनके दिल को तसल्ली हो गई। लेकिन आप अलैहिस्सलाम से जब पूछा गया तो आपने कहा कि यह सिलसिला के एक बहुत बड़े व्यक्ति के लिए है वह व्यक्ति नहीं। इस इल्हाम से माता जी ने घबरा कर एक दिन कहा कि चलो वापिस क़ादियान चलें। आपने उत्तर दिया कि अब वापिस जाना हमारे बस में नहीं। अब अगर खुदा ही ले जाएगा तो हम जा सकेंगें। परन्तु इस इल्हाम और बीमारी के इलावा आप अपने काम में लगे रहे और इस रोग ही में हिन्दुओं और मुसलमानों में सन्धि व मित्रता करवाने के लिए आपने एक लैक्चर देने का सुझाव दिया और लैक्चर लिखना आरम्भ कर दिया और उसका नाम "पैग़ामे सुलह" (मैत्री संदेश) रखा। इससे आपकी हालत और भी कमज़ोर हो गई। और बीमारी बढ़ गई। जिस दिन लैक्चर समाप्त होना था उस रात इल्हाम हुआ:

अर्थात न रहने वाली आयु पर भरोसा न करना। आपने उसी समय यह इल्हाम घर में सुना दिया और फ़र्माया कि यह हमारे सम्बन्ध में है। दिन को लैक्चर ख़त्म हुआ और छपने के लिए दे दिया गया। रात के समय आपको एक दस्त आया और बहुत कमज़ोरी हो गई। माता जी को जगाया। वह उठीं तो आपकी हालत बहुत कमज़ोर थी। उन्होंने घबरा कर पूछा कि आपको क्या हो गया है? कहा वही जो में कहा करता था (अर्थात मृत्यु रोग) इसके पश्चात् फिर एक ओर दस्त आया। इससे बहुत ही कमज़ोरी हो गई फ़र्माया मौलवी नुरुद्दीन साहिब को बुलाओ (मौलवी साहिब जैसा कि उपर लिखा गया है बहुत बड़े हकीम थे।) फिर फ़र्माया कि महमूद (लेखक पत्रिका) और मीर साहिब (आप अलैहिस्सलाम के ससुर) को जगाओ। मेरी चारपाई आपकी चारपाई से थोड़ी ही दूर थी। मुझे जगाया गया उठकर देखा तो आपको बहुत तकलीफ़ थी। डाक्टर भी आ गए थे उन्होंने इलाज शुरु किया परन्तु आराम न मिला। आख़िर टीके के द्वारा कुछ दवाईयाँ दी गई। इसके पश्चात् आप अलैहिस्सलाम सो

गए। जब सुबह का समय हुआ आप उठे और उठकर नमाज़ पढ़ी। गला पूरी तरह से बैठ गया था कुछ कहना चाहा परन्तु बोल न सके। इस पर कलम दवात माँगा परन्तु लिख भी न सके। कलम हाथ से छूट गई। इसके बाद लेट गए और थोड़ी देर तक नींद की सी हालत रही। और लगभग साढ़े दस बजे दिन को आप उस पाक ख़ुदा से जा मिले। जिसके दीन की सेवा के लिए आपने अपनी सारी उमर बिता दी।

बीमारी के समय आप की ज़बान पर एक ही शब्द था और वह शब्द अल्लाह था।

आपकी मृत्यु की सूचना बिजली की तरह पूरे लाहौर में फैल गई। प्रत्येक जगह की जमाअतों को तारें दे दीं गईं और उसी दिन शाम या दूसरे दिन सुबह के सभी अख़बारों के द्वारा भारत के लोगों को इस महान् व्यक्ति की मृत्यु की सूचना मिली। जहाँ वह कुलीनता जिसके साथ आप अपने विरोधियों के साथ व्यवहार करते थे हमेशा याद रहेगी। वहीं दूसरी ओर वह खुशी भी भुलाई नहीं जा सकती जिसका इज़हार आपके विरोधियों ने आपकी मृत्यु के समय किया। लाहौर की पब्लिक का एक दल आधे घंटे के अन्दर ही उस मकान के सामने आकर इकट्ठा हो गया। जिसमें आपका मुबारक शव रखा हुआ था और खुशी के गीत गा गा कर अपने रूहानी अंधे होने का सुबुत देने लगा। कुछ लोगों ने अजीब अजीब स्वाँग बनाकर अपने नीच (गिरे हुए) व्यवहार का सबूत दिया।

आपके साथ जो प्रेम आपकी जमाअत को था इसका हाल इससे पता चलता है कि बहुत थे जो आपके मुबारक शव को अपनी आंखों के सामने पड़ा देखते थे परन्तु वह इस बात को बानने को तैयार थे अपने होष (संवेदन) को दूषित मान लें परन्तु यह मानना उन्हें स्वीकार न था कि उनका प्रिय उनसे हमेशा-हमेश के लिए जुदा हो गया है। पहले मसीह के मानने वालों और इस मसीह के मानने वलों का अपने मुर्शिद के साथ प्रेम में यह फ़र्क है कि वह तो मसीह के सलीब से ज़िन्दा उतरने पर हैरान थे और ये अपने मसीह के निधन पर हैरान थे। उनकी समझ में यह नहीं आता था कि मसीह ज़िन्दा किस तरह है और इनकी समझ में न आता था कि मसीह मरा किस तरह है। आज से तेरह सौ साल पहले एक व्यक्ति जो ख़ातमन्नबीय्यीन होकर आया था उसकी मृत्यु पर अधिक सच्चे मन से एक कवि ने सच्चाई से भरा हुआ ये शेर कहा था कि:-

अर्थात् कि तू मेरी आँख की पुतली था। तेरी मौत से मेरी आंख अन्धी हो गई। अब तेरे पश्चात् कोई व्यक्ति पड़ा मरा करे हमें उसकी कोई चिन्ता नहीं। क्योंकि हम तो तेरी मृत्यु से डर रहे थे।

आज तेरह सौ वर्ष पश्चात् उस नबी के एक ग़ुलाम की मृत्यु पर फिर वही दृश्य आँखों ने देखा कि जिन्होंने उसे पहचान लिया था उनका यह हाल था कि यह संसार उनकी नज़रों में तुच्छ हो गया था। और उनकी सारी ख़ुशी दूसरे जहान में चली गई बल्कि अब तक आठ साल बीत गए हैं उनका यही हाल है और यदि शताब्दी भी बीत जाए परन्तु वह उनको कभी नहीं भूल सकते जब्कि ख़ुदा ताअला का प्यारा रसूल उनके साथ चलता फिरता था। दर्द व्यक्ति को परेशान कर देता है और मैं भी हज़रत मसीह मौऊद **अलैहिस्सलाम** की मृत्यु का वर्णन करके कहीं से कहीं चला गया। मैंने अभी वर्णन किया है कि साढ़े दस बजे आपकी मृत्यु हुई। उसी समय आपके मुबारक शव को क़ादियान में पहुंचाने का प्रबन्ध किया गया और शाम की गाड़ी में बोझिल हृदय के साथ आपकी जमाअत जनाज़ा लेकर चली और आपका इल्हाम पूरा हुआ जो समय से पूर्व कई पत्रिकाओं में छप चुका था कि "उनका शव कफ़न में लपेट कर लाए हैं।"

बटाला पहुँच कर आपका जनाज़ा उसी समय क़ादियान पहुँचाया गया और इससे पहले कि आपको दफ़न किया जाता क़ादियान की जमाअत ने (जिनमें कई सौ से अधिक प्रतिनिधि बाहर की जमाअतों के भी शामिल थे।) सब लोगों की सहमति से आपका प्रतिनिधि और ख़लीफ़ा हज़रत मौलवी हाजी नूरूद्दीन रज़ी अल्लाह अन्हो साहिब भैरवी को मान कर उनके हाथ पर बैअत कर ली और इस प्रकार अल्वसीय्यत में लिखी वह भाविष्यवाणी पूरी हुई कि "जैसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह अन्हो खड़े हो गए थे। मेरी जमाअत के लिए भी खुदा ताअला इसी रंग में प्रबन्ध करेगा" इसके पश्चात् ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने आपका जनाज़ा पढ़ाया और दोपहर के पश्चात् आप को दफन कर दिया गया और इस प्रकार आपका वह इल्हाम (कि "सताईस को एक वाक्या हमारे सम्बन्ध में") जो 1902 ई. में हुआ और विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका था पूरा हुआ। क्योंकि 26 मई को आपकी मृत्यु हुई और 27 मई को आप दफ़न

किए गए। और इस इल्हाम के साथ एक और इल्हाम भी था जिससे इस इल्हाम के माने स्पष्ट बता दिए गए थे और वह इल्हाम यह था कि ''वक़्त रसीद'' अर्थात् तेरी मृत्यु का समय आ गया है।

आपकी मृत्यु पर भारत के सब अख़बारों ने विरोध के बावजूद इस बात को कुबूल किया कि इस युग के आप एक महान व्यक्ति थे।

SEERAT HAZRAT MASSIEH MAOOD (A.S)

by :
Hazrat Mirza Basheeruddin Mehmood Ahmad Khalifatul Massieh the 2nd

Hindi Tranlation :
Bushra Tayyaba Ghori
Sadar Lajna Bharat

First Edition in Hindi 2000

Published by :
Nazarat Nashro Ishaat
Sadar Anjuman Ahmadiyya Qadian
Qadian - 143516
Distt. Gurdaspur Punjab
Ph : 0091 - (0)1872 - 70749
Fax : 0091 - (0)1872 - 70105

Fazle Umar Printing Press Qadian